तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स २-०० रुपये
अंक : १६ वर्ष : १८ १५-३१ अगस्त १९८२

दीवाना



अन्दर पढ़िये

- आज़ादी का कचूमर
- तंत्रता संग्राम-डिस्को स्टायल
- आज़ादी कैसी कैसी
- ल्म पैरोडी-हीरों का चोर



बालों की सुन्दरता का राज़
सिमको
शिकाका
केश तेल
मधुर सुगन्धित
लम्बे चमकीले और
काले बालों के लिए
SIMCO
SHIKAKAI
HAIR OIL
शिमला कैमिकल्स (प्रा०) लि०
5428, कूचा रहमान, चाँन्दनी चौक,
दिल्ली-110 006

ा बिरंगे डायमंड कामिक्स में

ंग चित्रकार प्राण की भेंट

ाचा भतीजा और ेतों की रानी 3/50



आपकी मनभावन पत्रिका

अंकुर

अंकुर 8 – मे पढ़िये

अंकुर-अमरूदों का व्यापार
चाचा भतीजा और तीसरी आंख
फैण्टम और जंगल का हैवान
लम्बू मोटू और ड्रेकुला की मौत
जासूस चक्रम और लंगड़ा भिखारी
पलटू और बगडू बदमाश

3/-





लम्बू मोटू और गद्दारों का विनाश

3/50



फौलादी सिंह और ड्रीम लैण्ड का बादशाह

3/50

व्यंग चित्रकार प्राण का लोकप्रिय चरित्र

पिंकी

अब डायमंड कामिक्समें

आगामी माह पेश करते हैं • पिंकी की नानी की कहानी



डायमंड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स 21 रु.

डाकव्यय : 5 रु.



अन्य डायमण्ड कामिक्स

ा चौधरी की शिकारी लकड़बग्घासिंह	3.50
ा चौधरी और बैंक के लुटेरे	3.50
ादसिंह और ग्लोब का आतंक	3.50
ादीसिंह की टारविल से टक्कर	3.50
ादीसिंह और शैतान टारविल	3.50
ादीसिंह और पृथ्वी के चोर	3.00
जी और जादूगर साम्भा	3.50
भांजा और चतुर खरगोश	3.00
ा भांजा और चतुर केकड़ा	3.00
ा भांजा और चतुर गीदड़	3.00
ा भांजा और बीरबल की सूझबूझ	3.00
मोटू और गद्दारों की टोली	3.50
मोटू स्मगलरों के बीच	3.00
मोटू और रहस्यमय हत्यारा	3.00
़ इकबाल और खून पीने वाले	3.00

डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स
बाल उपन्यास

ताऊजी और जादूनगरी में हंगामा	2.00
चाचा चौधरी और हवेली का खजाना	2.00
फौलादीसिंह और ब्रह्मांड की राजकुमारी	2.00
महाबली शाका और बीहड़ का बादशाह	2.00
लम्बू मोटू और मौत से मुकाबला	2.00
फैण्टम और विचित्र हत्यारे	2.00
चाचा भतीजा और जादुई तिलस्म	2.00
मामा भांजा और सरहद के बेटे	2.00

सिक्खों के दस गुरु
(सचित्र जीवनी आकर्षक पाँच रंगे आवरण में)
लेखक प्रियदर्शी प्रकाश

गुरु नानक देव	2.00
गुरु अंगद देव	2.00
गुरु अमरदास	2.00
गुरु रामदास	2.00
गुरु अर्जुन देव	2.00
गुरु हरगोबिन्द	2.00
गुरु हरिराय	2.00
गुरु हरिकृष्ण	2.00
गुरु तेग बहादुर	2.00
गुरु गोविन्द सिंह	2.00

डायमंड कामिक्स

2715 दरिया गंज, नई दिल्ली 110002

ऐसे बैंक के साथ कारोबार कीजिए जिसके 6,000 से भी अधिक कार्यालय हैं.



आप बैंकिंग सम्बन्धी अपनी तमाम ज़रूरतें पूरी करने के लिए स्टेट बैंक का कोई न कोई कार्यालय अपने निकट ही पाएंगे.

खास बात तो यह है कि भारत के सबसे बड़े बैंक के रूप में स्टेट बैंक के 6000 से भी अधिक कार्यालय देश भर में फैले हैं. और संसार के सभी प्रमुख वित्तीय केन्द्रों में भी इसके परिचालन हैं.

स्टेट बैंक के पास जमाकर्ताओं और उधारकर्ताओं के लिए कई खास योजनाएं हैं. आपकी अलग-अलग ज़रूरतें पूरी करने के लिए यहां प्रस्तुत हैं विभिन्न बचत योजनाएं :

पुनर्निवेश योजना, आवर्ती जमा योजना, बचत खाते, मियादी जमा, नकद प्रमाणपत्र, निरंतर पेंशन योजना, नियतकालिक जमा योजना (एन्यूइटी डिपॉज़िट सर्टिफिकेट)...

यही नहीं, मर्चेण्ट बैंकिंग और अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग सम्बन्धी बेहतरीन सेवाएं भी.

आप व्यवसायी हों या न हों, स्टेट बैंक से सम्बन्ध जोड़ना हर हालत में फायदेमन्द है.

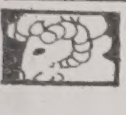
नवम एशियाई खेल, दिल्ली 1982
अधिकृत बैंकर

HTB-SBI-7379 R

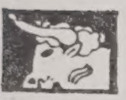
स्टेट बैंक
भारत का सबसे बड़ा बैंक

आपका भविष्य

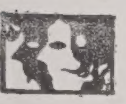
पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं. हंसराज शर्मा



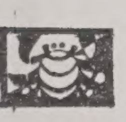
मेष : यात्रा सफल, व्यय यथार्थ, स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, आत्मविश्वास बढ़ेगा, परिवार से सुख, छोटी-छोटी बातों से परेशानी एवं स्वभाव में तेजी, झगड़े आदि से बचें, यात्रा न करें, खर्च बढ़ेगा।



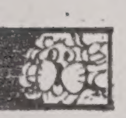
वृष : व्यवसाय नरम, लाभ खर्च बराबर, घरेलू हालात से मन परेशान, मेहनत से कुछ सफलता मिल सकेगी, कोई विशेष सूचना मिलेगी, आय में वृद्धि, कारोबार दृढ़, व्यर्थ की बातों से मन परेशान रहेगा।



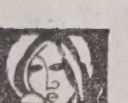
मिथुन : मेहनत ज्यादा, लाभ के साथ-साथ खर्चा भी काफी रहेगा, घरेलू बातों से चिन्ता, यात्रा सफल रहेगी, कोई विशेष काम बन जाएगा, रोज़गार से लाभ बढ़ेगा, मशीनरी आदि पर खर्च, यात्रा सावधानी से करें



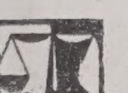
कर्क : यात्रा में परेशानी, कामधन्धों में रुकावट या लाभ पूरा न मिलेगा, सेहत नरम, दोस्त साथ देंगे, आर्थिक दशा अनुकूल, यात्रा लाभप्रद्र, अच्छे लोगों के सहयोग से काम बन जाएंगे, रोज़गार सुधरेगा।



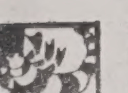
सिंह : कारोबार से अच्छा लाभ, व्यय कुछ अधिक परन्तु कामों में सफलता मिलती रहेगी, विशेष दौड़धूप रहेगी, यात्रा में परेशानी. आर्थिक लाभ देर से, कारोबार मध्यम, मित्र से मन-मुटाव रहेगा।



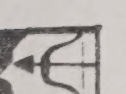
कन्या : विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा भी करनी पड़ सकती है, लाभ खर्च बराबर, नातेदारों से मेल जोल, घरेलू खर्च ज्यादा, कारोबार ठीक चलेगा पर आर्थिक लाभ देर से मिलेगा, मित्र मदद करेंगे, दिन ठीक नहीं।



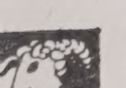
तुला : परिश्रम काफी करना पड़ेगा, सरकारी कामों में सफलता, आर्थिक स्थिति सुधरेगी, कारोबार बढ़ेगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय अधिक, शुभफलों में वृद्धि, कारोबार में दृढ़ता, यात्रा लाभप्रद रहेगी।



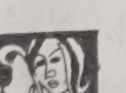
वृश्चिक : आय यथार्थ, घरेलू पक्ष से चिन्ता, शुभफलों का संचार होने पर भी मानसिक परेशानी बनी रहेगी, कारोबार से लाभ, परिश्रम द्वारा सफलता, शत्रु एवं बाधा पर विजय फिर भी सावधान रहना।



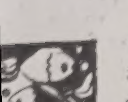
धनु : परिश्रम काफी होगा एवं सफलता भी मिलती रहेगी, यात्रा सफल, व्यर्थ की बातों से परेशानी होगी, यात्रा छोड़ दें, खर्च आमदनी से ज्यादा होगा, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, सावधानी से रहें, कारोबार सुधरेगा



मकर : व्यय की अधिकता से परेशानी, पर आर्थिक मदद मिलने से काम समय पर बन जाएंगे, यात्रा में सुख, मनोरंजन आदि पर विशेष व्यय, समय अच्छा गुजरेगा, शुभ काम पर व्यय, कारोबार दृढ़ रहेगा।



कुम्भ : विशेष व्यय होने से परेशानी, सहयोगी अंग-संग रहेंगे, कोई विशेष समाचार मिलेगा, यात्रा भी करनी पड़ सकती है कारोबार मध्यम, सफलता मिलती रहेगी, कोई अप्रिय घटना हो सकती है।



मीन : खर्च ज्यादा, यात्रा पर न जायें तो अच्छा है, व्यर्थ की बातों से मन परेशान, लाभ आशा से कम होगा, आमदनी अच्छी, हालात भी सुधरते दिखाई देंगे, आर्थिक दशा ... से अच्छी होगी, ... से बचें।

आपके पत्र

दीवाना का नया अंक मिला। सभी फीचर ''हम किसी से कम नहीं'' थे। खास तौर से फैण्टम, लल्लू और बरसाती प्यार का मौसम बहुत अच्छे लगे। ''बाजार'' फिल्मी ड्रामा देने का धन्यवाद! ''मोटू-पतलू'' प्रत्येक अंक में दिया करें, ये तो दीवाना का सबसे बड़ा आकर्षण है।

कहानी ''पराए कन्धे'' बहुत अच्छी थी, इसमें हुकम चन्द जी ने ढोंगी भक्तों के गाल पर करारा तमाचा मारा है। इसके लिए लेखक को शुक्रिया!

आशा है अगला अंक भी ऐसा ही होगा।

—राजू बेदी, सितारगंज (नैनीताल)

दीवाना अंक १२ मिला पढ़ कर मन प्रसन्नता से झूम उठा। नई सामग्री शून्यालाप के लिए धन्यवाद। लल्लू, छत टपकने का इलाज और सिलबिल-पिलपिल ने तो हंसी को रोक पाना मुश्किल कर दिया।

आपसे अनुरोध है कि किसी निकटतम अंक में 'ब्रूसली' का पोस्टर देने की कृपा करें।

—राजकुमार गुप्ता, ग्वालियर (M.P.)

बहुत प्रतीक्षा के बाद दीवाना का अंक नं. ११ मिला। मैं जैसे-जैसे इसे पढ़ता गया, वैसे-वैसे ही मेरा गुस्सा हवा होता गया। शायद कुछ जादू सा भरा रहता है आपके फीचर में। मैं अपनी तरफ से दुनिया की सब से बड़ी शक्ति को यही प्रार्थना करता हूं कि: दीवाना जिये हजारों साल। साल के दिन हों पचास हज़ार।।

—एन. एन. भाटिया नं. ४०१ ए. एफ. स्टेशन

दीवाना का अंक नं. ११ मिला। यह अंक बहुत ही ज़्यादा इंतजार करने के बाद मिला, इसीलिए पढ़ने का मज़ा कई गुना और बढ़ गया। इस बार कुछ नये किस्म के फीचर देखने और पढ़ने को मिले। इसीलिए शायद पुराने फीचर जैसे मोटू-पतलू, नामी चोर, लल्ला की लव स्टोरी आदि देखने को नहीं मिले। फिर भी यह अंक एक मनोरंजक अंक था। अन्त में दीवाना को सभी तरह की शुभ कामनाएं देते हुए आशा करता हूं कि भविष्य में भी ऐसा मसाला मिलता रहेगा।

—नरेन्द्र राजीव
गोविन्द नगर (कानपुर)

अंक १२ यानी दर्जनवां अंक दर्जनों हंसी के फव्वारे लिये हमारी बगिया में आया जिसके फूलों की खुश्बू से हमारा दिल महक उठा। लल्लू, छत टपकने का इलाज, सिलबिल-पिलपिल बरसातों में ...; शून्यालाप और राजाजी जैसे महकते फूलों के साथ, 'बाज़ार' का रस भी। वाह मज़ा आ गया।

—वेद प्रकार 'अमित', चौण्डा, दिल्ली

दीवाना का अंक १२ इस बार जल्द प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर चिल्ली का चेहरा हर बार की तरह बढ़िया सज-धज से खिला हुआ था।

छत टपकने का इलाज, सिलबिल पिलपिल, बरसातों में, शून्यालाप तथा राजाजी बेहद पसन्द आये। आपने जो फिल्म बाजार की कहानी दी। ये बहुत अच्छा किया। इससे हम कहानी पढ़कर ही फिल्म देखेंगे। कृपया हर बार नई फिल्मों की कहानी भी स्थायी स्तम्भ बना लें। हुकम चन्द 'पक्षी' की कहानी पराये कंधे तो इतनी अच्छी थी कि जी चाहता था कि बार बार पढ़ूं।

कहानी में जो कुछ दिया गया वो सच है बिलकुल। कुछ लोगों ने तो इसे (जागरण को) धंधा बना लिया है।

—गुरमीत सिंह मीत, ... ल्ली-४९

मुख पृष्ठ पर

मिली आज़ादी दूर अन्धेरा
जब आया नया सवेरा
हर दिल में अपनापन आया
भारत वर्ष हैं मेरा।
कट चुकीं जंजीर जुल्म की
औरतों ने तब खुशी मनाई
तीनों रंगों से ...या पहनाई।
चिल्ली ...

दीवाना

अंक : १६ वर्ष : १८ १५-३१ अगस्त १९८२

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : ... गुप्ता
... पाक्षिक
दी... बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : २७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक : १४ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

आजादी का कचूमर

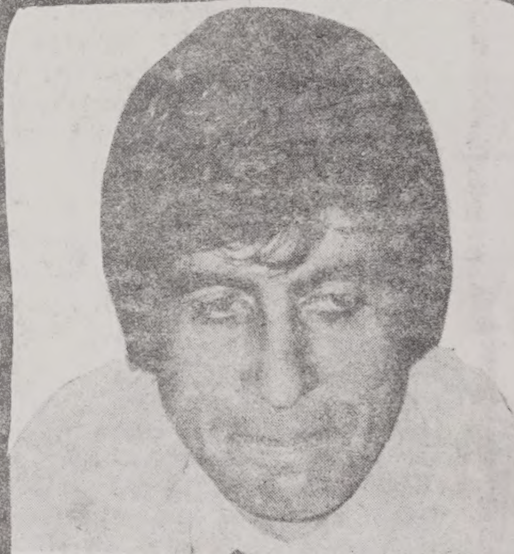
देश आजाद हुआ तो जनता से बड़े-बड़े वायदे किये गये। इस देश में घी दूध व शहद की नदियां बहेंगी, बेकारी नहीं होगी भूख, गरीबी व नंगापन नहीं होगा वगैरह। लेकिन कोई वादा पूरा नहीं हुआ। अच्छा ही हुआ पूरा नहीं हुआ। आप चौंक गये होंगे हमारी बात पर। साहब, इन वादों का पूरा न होना ही अच्छा है। अगर ये वादे पूरे हो गये होते तो गजब हो गया होता। इतनी कठिनाई से मिली आजादी का कचूमर निकल गया होता। आप पूछेंगे वह कैसे? वह ऐसे ....

अगर देश में घी की ही नदियां बहती तो हम नहाते कहां से? कपड़े कैसे धोते? अच्छी से अच्छी लड़की भी भुतनी सी नज़र आती। बाल गुंथे हुये। कपड़े चीकड़ और शरीर पर मैल की तह-दर-तह।





अगर देश में दूध की नदियां बह रही होतीं तो? दूध में मछलियां तो पलेंगी नहीं. बंगाली भाई आरोप लगाते कि यह बंगाल को भूखा मारने की साजिश है। और अलग होमलैंड की मांग करते।



'गरीबी न होती तो फिल्मों में अभिताम एंग्री यंगमैन की भूमिकायें कैसे निभा पाता? अभिताम को मेरे अंगने में के ही रोल मिलते और हम सुपरस्टार से वंचित रहते।

अगर घी की नदियां ही होतीं तो मोटापा चारों ओर नज़र आता। छरहरी लड़की देखने को भी नसीब न होती। पतली-से-पतली लड़की चित्र में दिखाई ...की के डीलडौल की होती।



अगर बेरोजगारी न होती और सब काम पर लगे होते तो बेकार लोगों का धंधा 'रोमांस' कौन करता? कौन रांझा या महिवाल बनता? इश्क की कहानियां जन्म लेना छोड़ देतीं और लड़कियां बैठी-बैठी बोर होकर बाल नोचती रहतीं।











समाज की बुराइयां सब दूर हो गयी होतीं, दहेज प्रथा भी खत्म हो गयी होती तो ऐसे नज़ारे देखने को कहां मिलते।





चना कुरमुरा

अध्यापक : तुम दो सरल प्रश्नों का उत्तर देना पसंद करोगे या एक कठिन प्रश्न का ?
विद्यार्थी : एक कठिन का!
अध्यापक : अच्छा बताओ, पहला व्यक्ति कहां पैदा हुआ था ?
विद्यार्थी : दिल्ली के हस्पताल में।
अध्यापक : कैसे ?
विद्यार्थी : सर, आप दूसरा प्रश्न क्यों कर रहे हैं ?

●

वकील : आप का कहना है, दुर्घटना के समय आप दुर्घटना स्थल से कोई सौ फुट की दूरी पर थे। क्या आप यह बतायेंगे, आप कितनी दूर तक साफ-साफ देख सकते हैं ?
अभियुक्त : जी मैं सूर्य को बिलकुल साफ देख सकता हूं। और लोगों का कहना है सूर्य यहां से लाखों मील दूर है।

●

पत्नी पती से-एक कोकटेल पार्टी में कई राउंड पीने के बाद, ''बहराम! और शराब न पियो तुम्हारा चेहरा तो अभी से धुंधला दीखने लगा है।

●

श्मशान की छुट्टी!

—शिव रैना

बुजुर्गों ने सही कहा है, कि इंसान अपने आधे भेद स्वयं खोलता है। हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ। सरकारी नौकरी के तेरहवें इंटरव्यू में, हम 'रिजेक्ट' हुए, तो हमने असफल प्रत्याशियों की भीड़ में छाती ठोंककर ऐलान कियाः ''भाड़ में जाए यह दो कौड़ी की नौकरी और अंधे कुंए में गिरे ये इंटरव्यू लेने वाले! हम कल से बिजनेस करेंगे और बिजनेस भी ऐसा, कि पैसा बरसाती मेढ़कों की भांति पैदा हो!''

हमारी घोषणा की प्रतिक्रिया-स्वरूप, आधे निराश प्रत्याशी हमें घर तक छोड़ने आए। दो एक ने तो 'दीक्षा' के बाद, शिष्य तक बनने की इच्छा प्रकट की। मगर, हमने अनिच्छा-पूर्वक उन्हें विदा कर दिया।

अगले रोज़ कुछेक शुभचिन्तकों से पैसा पकड़ कर, हमने स्थानीय श्मशानघाट की लकड़ी, पानी, व्यवस्था, 'संस्कार' आदि का ठेका ले लिया! आशानुसार, काम चल निकला। खरबूजा, तरबूज और सड़े-गले मौसमी फलों की बदौलत, हैज़ा फूट निकला था नगर में। अतएव 'बोलो राम' रोड पर, शवों की संख्या नित्य घटने के बजाय, बढ़ती रही। हमें चार-पांच कर्मठ सहयोगी और रखने पड़े। एक सप्ताह बाद, हमारे लाभ की राशि ही इतनी बन गयी कि हमने तुरन्त उधार देने वालों की रकमें सधन्यवाद वापस कर दीं। हम अब दुगुने उत्साह और तिगुनी वक्र दृष्टि से, मुर्दों की राह देखने लगे। लकड़ी धड़ाधड़ बिकने लगी थी। हमने कफन, कोरे घड़ों, तथा मृत्यु के बाद की सभी आवश्यक सामग्री के तीन स्टॉल भी श्मशान-भूमि के भीतर खोल लिए। मॉडर्न तौर-तरीकों के अनुसार, हम कफन और सामग्री को आकर्षक बंद पैकेटों में बेचने लगे। पैकेट-पद्धति से, 'हेराफेरी' (यानी लाभ) अधिक होता था। सामग्री की मात्रा उचित से कई डिग्री कम रहती। शोक-संतप्त लोगों को मोल-तौल या परीक्षण का वैसे भी ख्याल कैसे आता? हमारी पांचों घी में थीं। यह सिलसिला एक मास तक चला। हम लखपती-मंजिल की ओर तेज़ी से बढ़ने लगे।

एक दिन पौ फटने से रात्रि के बारह बजे तक, हम दिल-दिमाग-हिलाऊ श्मशान-घाट पर मक्खियां मारते रहे—परन्तु 'ग्राहक' न आया। क्या चालीस लाख की जनसंख्या वाले इस विशाल नगर में, मरा ही कोई नहीं, आज? हमने अपने 'जासूसों' को अस्पतालों, थानों तथा नगरनिगम जैसे स्रोतों के अलावा, नगर के कोने-कोने में दौड़ाया। खबर मिली कि प्राकृतिक मृत्यु और दुर्घटनाओं सहित, लगभग बीस व्यक्ति मरे हैं।

हमारा माथा ठनका। तो क्या मृतकों को मसालों में बंद करके 'मिस्री ममी' बना दिया गया है या नदियों में बहा दिया गया? या डॉक्टरों को बेच दिया गया क्या?

स्वयं भाग-दौड़ करने के बाद, रहस्य यह खुला कि इंटरव्यू वाले दिन, हमारी 'घोषणा' से प्रेरित, एक युवा प्रत्याशी चलता फिरता 'फर्नेस' यानी बिजली से चलने वाला सर्वसुलभ संस्कार-यंत्र नगर में ले आया था! दुःखी लोगों के घरों में जा-जा कर, वह शवों का संस्कार कर रहा था! श्मशान-घाट पर कौन आता चलकर?

कहते हैं, 'जिस हाथ को हम तोड़ नहीं सकते, उसे चूम लेना चाहिए।' अतएव हमने तुरंत उसी प्रत्याशी को श्मशान-घाट का ठेका भी दे दिया, और स्वयं फिर से 'इंटरव्यू' देने लगे हैं!

हास्य कथा

गनपति बाबा के दूत

शिशिर विक्रांत

उन बिल्कुल काल जैसे, विशालकाय चूहों ने हमको जितना परेशान कर रखा था, उतना अब तक के जीवन में किसी भी परेशानी ने परेशान नहीं किया था. चूहों का मोटापा देखकर, भारत में अन्न के अभाव का कारण कोई भी सहज ही समझ सकता था. और क्रूरता का तो साक्षात रूप ही थे, वे चूहे. कई दिनों के बाद बड़े प्रेम और प्यार से बनवाया गया हमारा सूट, कितनी हृदयहीनता से उन्होंने मात्र एक रात में चिंदी-चिंदी कर दिया था, उसका दुख तो सिर्फ हमें ही महसूस हो सकता था.

बाजार आते-जाते, बहुत दिनों से हमारी नजर जूतों की दुकान के शो-केस में सजे, एक मनहारी जोड़ी जूतों पर लगी थी. उन्हें देखते तो सोचते कि जिस दिन ये हमारे चरणों की शोभा बढ़ाएंगे, उस दिन पैरों के भाग्य ही जाग जाएंगे. लाख इच्छा होने पर भी, उनको खरीदना असम्भव था. उनके साथ बंधी हुई एक स्लिप पर, '१२९.९५ रु०' लिखा देखकर हमारा हाथ अनायास ही जेब की टोह लेने लगता और हम मजबूरी से मुंह लटकाए, अपने रास्ते बढ़ जाते. क्योंकि पाकेट 'अलाऊ' ही न करती.

उस दिन हमारी खुशी की कोई सीमा ही नहीं थी, जब हम किसी प्रकार पैसे जोड़कर, जूते खरीद कर लाए. जूतों की कसम, हमने उस दिन तो उन्हें पहना ही नहीं, सिर्फ हाथों में लिए घंटों तक उनको निहारते रहे और खुश होते रहे. जूतों को कभी इधर से देखते, कभी उधर से परखते. हमारे इस पागलपन को दादी जी ने देखा तो उनके डांटने पर, जूतों को हमने बड़े जतन से एक स्थान पर रख दिया, बा-कायदा एक मजबूत डिब्बे में बंद करके.

जूतों के लुभावने फीतों की कसम, रात भर सोते में जूतों का ही सपना देखते रहे. सपने में उस रात जितने आकार-प्रकार के जूते हमने देखे, जूतों की दुकान वाले किसी दुकानदार ने भी अपनी सारी जिंदगी में उतने न देखे होंगे. सपने का दृश्य भी बड़ा अजीब था. हम अकेले ही एक विशाल वन में घूम रहे थे और देखते जा रहे थे, पेड़ों पर फलों की जगह लटके अनेकानेक जूतों को. अगल-बगल उगी हुई झाड़ियों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के 'चरणदासों' की भरमार थी.

बड़े सवेरे ही जब आंखें खुलीं और हमें वर्तमान का ध्यान आया तो बिस्तर से कूद कर, जूतों के दर्शन के लिए, उस स्थान पर पहुंचे, जहां रात को हमने उन्हें संभाल कर रखा था. दो-तीन बार आंखें मलीं, सिर झटका, किंतु जब भली प्रकार समझ लिया कि जूते यहां से मयडिब्बा दीवाना नदारद हैं तो चोरी की आशंका से भयभीत हो, हम हर कमरे में जाकर निरीक्षण करने लगे कि किसी चोर ने रात को सेंध न लगाई हो.

जब हमें न तो कोई सेंध दिखाई दी और न ही जूतों के अतिरिक्त कोई सामान गायब दिखाई दिया, तब चोरी की आशंका मन से रफूचक्कर हुई. हम आश्चर्यचकित हो जूतों की खोज में कोना-कोना देखने लगे. इसी प्रकार देखते हुए, जब किचिन में पहुंचे तो एक आलमारी के नीचे एक काली सी वस्तु नजर आई. उस वस्तु को निकालकर, जब हमने देखा तो देखते ही आंखें पथरा गईं. जोड़ी का एक जूता हमें प्राप्त हो गया था, किंतु इस समय बनावट से वो जूता कम, हवादार सैंडल अधिक प्रतीत होता था. उसकी चिथड़ा हालत को एक मिनट तो हम दुख से, बुत से बने देखते रहे, पर दूसरे पल ही पूरी ताकत से भांय-भांय कर रुदन-राग का अलाप करने लगे. चिथड़ा जूते को देखकर हम ऐसे टेसुए बहा रहे थे, मानो कोई सगा स्वर्ग सिधारा हो.

इस बेवक्त की बेसुरी रागिनी से घरवालों की नींद टूटी. कुछ क्षणों में ही वे सब हमारे सामने आ खड़े हुए. फटेहाल जूते को सीने से चिपकाए, हमें बेरोक रोता देख, एक क्षण को तो सब खामोश खड़े रह गए. फिर दादी ने हमें 'लल्ला-लल्ला' कहकर, जोर से झिंझोड़ा. झिंझोड़ने से हमारे बंद नेत्र तो अवश्य खुले, पर रोना पहले जैसा चालू ही रहा. हमारी दशा को देख, पिताजी ने अपने साथ सभी के मन की आशंका को साफ करते हुए, गुस्से से कहा— ''मैं तो जासूं पहले ही कह तो कि जादा रचना-वचना लिखबे में अपनी दिमाग मत खपायो कर. आखिरकार, जे छोरा जा लिखाई के चक्कर में है गयौ ना पागल . . .''

पिताजी के 'पागल' शब्द को सुनकर, हम एकाएक चुप हो, उन सबकी गलतफहमी को दूर करते हुए बोले— ''अरे मैं पागल-वागल कछू ना भयो.'' ''तो फिर जा फटे जूता कू सीने से चपटा कर सुबह-सुबह रो काय कू रहो है?—दादीजी ने संतोष की सांस लेते हुए अचरज से पूछा. ''अरे रोऊं ना, तो कहा करूं ? देखो तो रात को जेइ जूता नए खरीद के लायो. दूसरे को तो पतौ ही ना है. एक जेइ मिली है, सो भी जा हालत में. तुम्हारे गनपति बाबा के दूतन की जे सब मेहरबानी है.''—लगभग रोते हुए हमने अपनी हालत की वजह बताई.

दूसरे जूते की प्राप्ति, हमें चार घंटे की तमाम कोशिशों के बाद, कबाड़ वाली कोठरी में हुई. जूते की दशा देखते हुए, बुद्धिमान चूहों ने उसे, उसके सही स्थान पर पहले ही पहुंचा दिया था. जूतों के डिब्बे का तो आज तक उसी प्रकार पता नहीं चला, जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में भीम द्वारा एक महारथी के फेंके गए रथ का आज तक कोई पता नहीं है. डिब्बे को शायद वे चूहे, किसी विशेष उद्देश्य से, विशेष स्थान पर ले गए थे.

क्रोध से कांपते हुए, हम अपने इन भयानक शत्रुओं को मार डालने का निश्चय कर, एक के बाद एक उपाय सोचने लगे. चूहा मार दवाई खिलाकर, चूहों के खात्मे के लिए तो हम बहुत दिनों से कहते आ रहे थे. पर दादी जी ने हमें ढंग से समझाते हुए, बिगड़ कर एक बार कहा था— ''अरे लल्ला, चूहन कू मत मारियो. जे सब तो गनपति बाबा के दूत होवें हैं. इन्हें मारेगौ तो गनपति बाबा कोप में पतो ना कहा कर डालें.''

उस समय तो हम दादी जी की बात सुनकर सहम गए थे, पर इस समय अपनी जान देकर भी चूहों को खदेड़ने का विचार हम पक्के निश्चय के साथ कर चुके थे. आखिर कार, 'सांप भी मर जाए, लाठी भी न टूटे' की कहावत चरितार्थ करने के लिए, हम चूहे दानी खरीदने के उद्देश्य से, झटपट रवाना हो गए.

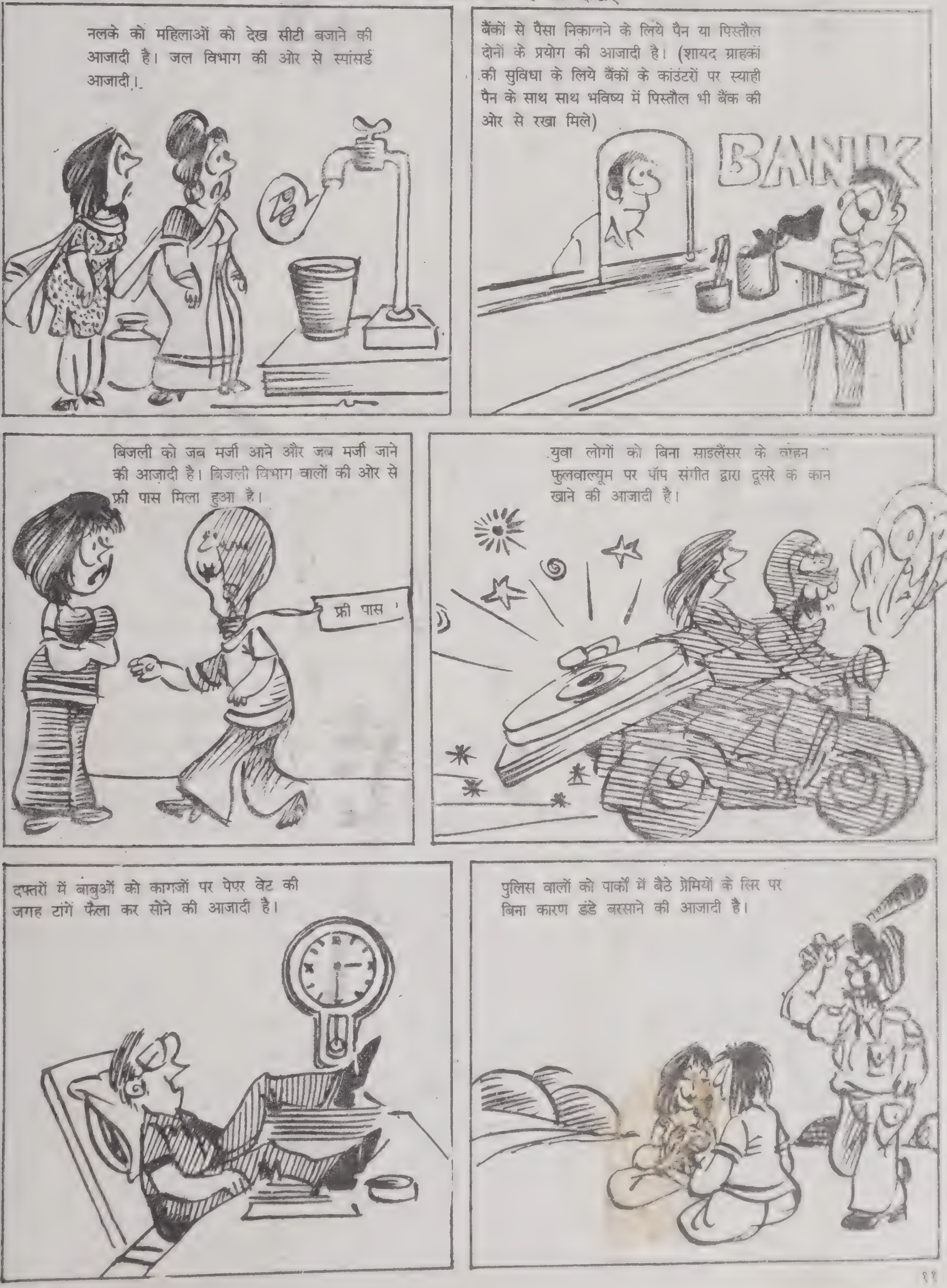
चूहेदानी वाली अपनी बातों से हमें किसी फिल्मी-कामेडियन से कम नहीं लग रहा था. न जाने किस शताब्दी की, अजीब प्रक्रिया और प्रकार वाली चूहेदानी उसने हमारे सामने रख दी. चूहेदानी पर नजर डालते हुए, हम थोड़ा खिंचे स्वर में बोले— ''अरे भइया, कोई नई दिखाओ. लगता है, जैसे तुमने इसको हमारे लिए ही वर्षों से रख रखा है.'' ''बाबूजी आप भले ही हंसी कर रहे हों, पर बात सचमुच यह ही है...''—चूहेदानी वाला दार्शनिकों के भाव में बोला— ''अरे साहब, चूहे चाहें किसी ने भी पकड़े पर पाप के भागीदार तो हम भी बनते हैं. आपकी सूरत से आपकी परेशानी टपक रही है, इसीलिए आपको दे रहे हैं, वरना हर किसी को हम थोड़े ही देते हैं. वैसे, आप इसे बिना समझे ले जाइए, अगर चूहा पकड़ न आए तो चूहा वापस, ऐसी मैं गारंटी देता हूं.

चूहेदानी वाले की चूहेदानी से नहीं, बल्कि बात से खुश हो हम चूहेदानी घर ले आए. दादी जी हमें लाख डांटती-फटकारती रहीं, पर हम भी अपनी धुन के डबल पक्के थे. सप्ताह भर में रातों को जाग-जाग कर हमने चूहों का सफाया कर ही दिया. मुसीबत यह थी कि चूहेदानी में, एकबार में केवल एक ही चूहा कैद हो सकता था, लिहाजा एक के कैद होने पर, चाहे दिन हो या बर्फीली रात, हमें उसे छोड़ने के लिए काफी दूर जाना पड़ता था. कई बार तो रात को कुत्तों ने भी खदेड़ दिया था, पर हमें लाख बाधाएं पार करके भी

शेष पृष्ठ ४३ पर

आजादी कैसी कैसी

आजकल आजादी के नये नये रंग हमारे सामने हैं जरा देखिए —



"व्यंग्य."

तलाश एक कुर्सी की

संजय कुमार श्रीवास्तव 'सरल'

जैसे कि हर आम-खास आदमी को एक कुर्सी की तलाश है। ये हमारी खोटी किस्मत का ही कमाल है कि मुझे अभी तक अपने इस काम में सफलता नहीं मिली। कहीं जुगाड़ ही नहीं बैठता!

अभी लगभग एक साल पहले की बात ही तो है। मुझे आफिस में एक पद मिला क्लर्क का—यानी कि क्लर्क की कुर्सी! मगर अब क्या कहूं, किसे दोष दूं मैं—अपने को या अपनी किस्मत को? कहने के लिए तो वह कुर्सी बेहद अच्छी थी, लेकिन उस पर बैठने के बाद ही उसके अच्छे होने का रहस्य खुला। यानि कीलों और गर्द की परतों के अलावा वह कुर्सी खटमलों की राजधानी थी! दो-चार दिन बैठा किसी तरह से उस कुर्सी पर, लेकिन आखिर में मुझे लाचार होकर अपनी जान की सलामती के लिए वहां से कुर्सी तोड़कर भागना ही पड़ा!

एक दिन पेपर पढ़ रहा था। अचानक ही नज़रें 'आवश्यकता है' कालम पर पहुंच गईं। पढ़ने पर पता चला कि अध्यापक पद के लिए कुछ स्थान रिक्त हैं। मैंने भी अपनी किस्मत की आजमाइश के लिए आवेदनपत्र प्रस्तुत कर दिया।

भगवान बड़ा कारसाज़ है! वह सबकी सुनता है। उसने मेरी भी सुन ली। मेरा आवेदन-पत्र स्वीकृत हो गया और मैं इंटरव्यू आदि के बाद अध्यापक पद के लिए चुन लिया गया। मुझे इतनी ज्यादा खुशी हुई, जितनी कि किसी को राशन-कार्ड पर चीनी मिल जाने पर होती है! मैं समझ गया कि मेरी कुर्सी की तलाश का अभियान अब समाप्त हो चुका है और मुझे मेरी ज़रूरत के अनुसार कुर्सी मिल गई है।

मगर क्या कहूं अपनी किस्मत को! हमेशा ऐसा धोखा देती है, जैसे चुनाव में विजयी हो जाने के बाद नेता जनता को धोखा देता है! यह तो सर्वविदित ही है कि इस वर्ग की कुर्सी का एक पाया हमेशा कमजोर होता है, जो होनहार विद्यार्थियों की कृपा-विशेष से कभी भी धराशायी हो सकता है। यह भी डर बना रहता है कि क्या पता कुर्सी पर तेजाव की कुछ बूंदें न पड़ी हों या फिर कुर्सी की दो-चार कीलें ही इधर-उधर निकाल न दी गई हों! कहने का मतलब यह कि यह कुर्सी भी मुझे नहीं जमी और मैंने इस कुर्सी से त्यागपत्र दे दिया।

अब ध्यान कुर्सी की तलाश में इधर-उधर घूमने लगा। ध्यान-दृष्टि का केन्द्र-बिन्दु सरकारी सुविधा संपन्न कुर्सियों पर जा ठहरा। बहुत सोच-विचार के बाद निष्कर्ष निकला कि सरकारी सुविधा संपन्न कुर्सी के बारे में सोचना भी बेकार है। इसके कई कारण थे। मसलन—मुझे स्कूल में अंग्रेजी 'प्रथम भाषा' के रूप में पढ़ाई नहीं गई थी। दूसरे दर्जे की भाषा की आड़ में अंग्रेजी प्रथम भाषा बनी सदैव हमारे पीठ पर गधे की लादी की तरह छायी रही और हम गधे बने उसका बोझ हांफ-हांफ कर ढोते रहे। परिणामस्वरूप मुझे कभी सौ में तैंतीस-चौंतीस अंक से ज्यादा न मिले! इसलिए मैंने अपनी कोशिशों को इस वर्ग से अलग कर दिया। यहां भी भाग्य ने धोखा दिया और मुझे फिर से निराश हो जाना पड़ा।

लेकिन मैं भी अपनी धुन का पक्का हूं! जो भी ठान लेता हूं, उसे पूरा ही करके छोड़ता हूं! मैं 'हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम' पर विश्वास रखता हूं। मैंने वकील, डाक्टर, इंजीनियर आदि वर्गों पर भी अपनी नजरें गढ़ाई। तमाम अलग-अलग रंग और तरह-तरह के आकारों की कुर्सियां थीं। लेकिन मुझ अंधे के पास वह लाठी नहीं थी, जिसके सहारे से मैं उन कुर्सियों तक पहुंच पाता! किसी कुर्सी के लिए सिफारिशी चिट्ठी चाहिए थी, तो किसी कुर्सी के लिए थैली चाहिए थी। मगर मैं तो ठहरा एकदम फटीचर आदमी! मेरे पास भला ये चीज़ें कहां से आतीं? संक्षेप में मुझे केवल इतना ही कह देना चाहिए कि मेरी कुर्सी की तलाश का अभियान यहां भी अधूरा रहा!

आखिर 'हारिए न हिम्मत' की भी एक सीमा होती है! हमारी आशा 'निराशा' में परिणित हो गई। मैंने सोचा—'क्यों न अपनी कुर्सी की व्यवस्था संसद में की जाये! वहां बैठकर लोग देश की जड़ें तक खोद डालते हैं।'

लेकिन फिर सोचा—'बिना जनता की अनुमति और सहमति के मैं वहां अपनी कुर्सी कैसे लगवा सकता हूं!' यह भी एक कठिन प्राब्लम थी।

वैसे अपने को समझदार समझने वाले कुछ लोगों का कहना है—'संसद में तो वैसे ही तमाम कुर्सियां लगी हैं। वहां अपनी अलग कुर्सी ले जाने की क्या तुक है?'

उन लोगों को उत्तर देते हुए मुझे सिर्फ इतना कहना है—'क्या लोगों ने मुझे इतना ज्यादा घटिया या कमजोर समझ लिया है कि मैं किसी भी घटिया कुर्सी पर बैठ जाऊं?'

मैंने अपने विचार को कार्यान्वित करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। अभी हाल में ही मैंने अपनी मनपसंद तरीके से एक कुर्सी तैयार करवा ली है। अब मेरी कुर्सी का परिचय जान लीजिए! मेरी कुर्सी सागौन की लकड़ी की है। कुर्सी की ऊंचाई चार फीट है। ऐसा मैंने इसलिए करवाया है, जिससे कि मेरी कुर्सी संसद-भवन की सभी कुर्सियों से ऊंची नजर आये।

मेरी कुर्सी के चारों पायों पर मेरे राजनैतिक सिद्धांत अंकित हैं। आप भी उन सिद्धांतों से अपरिचित और उन सिद्धांतों के प्रति शंकालु न रहें, इसलिए मैं चारों सिद्धांतों का वर्णन कर रहा हूं:

मेरी कुर्सी के पहले पाये पर राजनैतिक जीवन का प्रथम सिद्धांत अंकित है। पाये पर लिखा है—'मैं कुर्सी बचाने के लिए बराबर दलबदल करता रहूंगा।''

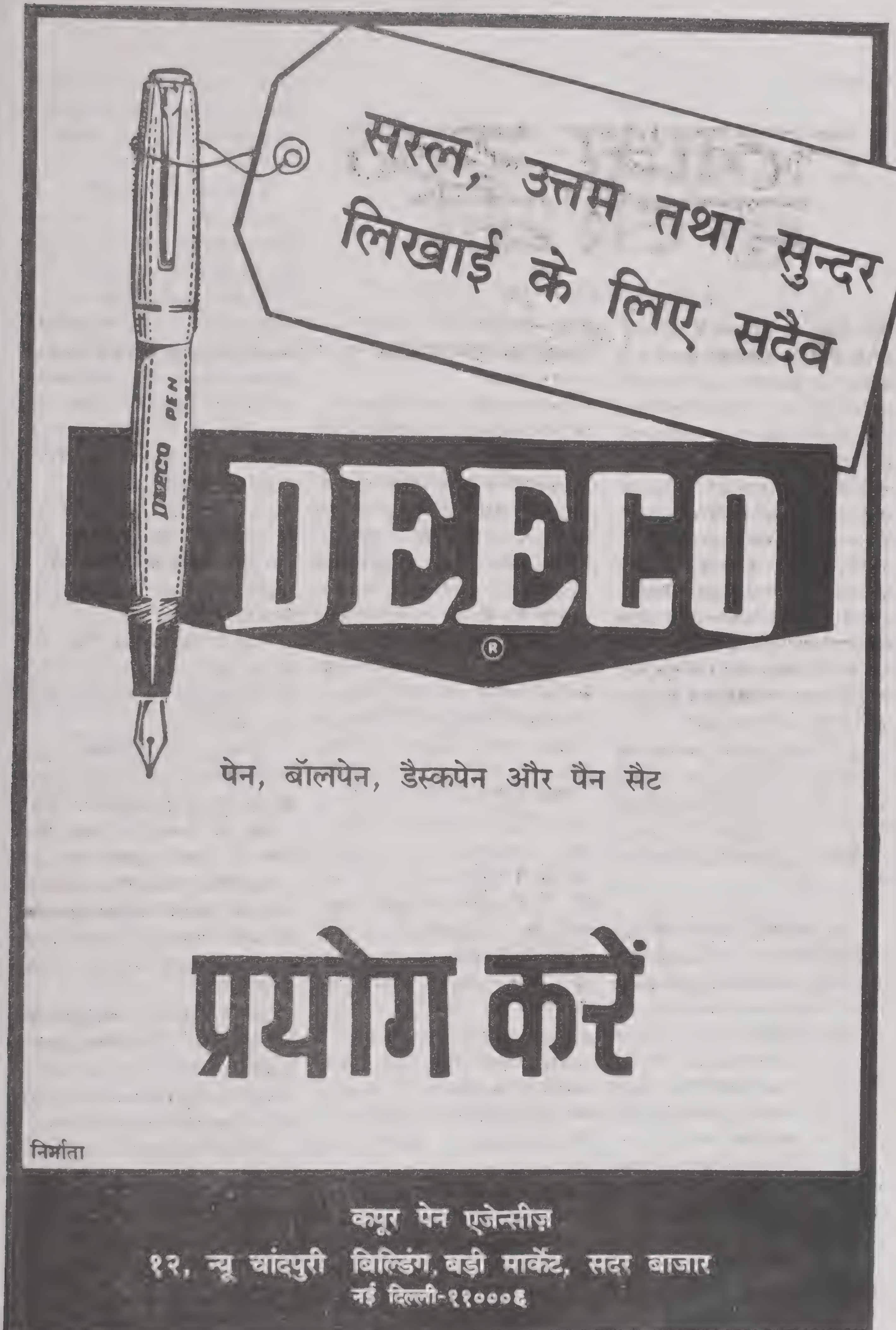
कुर्सी के दूसरे पाये पर राजनीति का दूसरा सिद्धांत अंकित है—'सदैव मेरी इच्छानुसार ही मेरी कुर्सी के रखने का स्थान निर्धारित होगा।'

तीसरे पाये पर राजनीति का तीसरा सिद्धांत अंकित है—'देश की अहिंसक राजनीति को 'अखाड़ा-नीति' में परिवर्तित करने के लिए मैं एक कर्मयोगी की भांति सदैव जुटा रहूंगा।' ऐसा मैंने इसलिए लिखवाया है, क्योंकि देश के इतिहास में 'अमरत्व' के लिए यह नीति आवश्यक है!

चौथे पाये पर राजनीति का चौथा और अंतिम सिद्धांत लिखा है—'मैं अपने मौलिक अधिकारों (अर्थहीन बकवास करते रहने और दूसरों से अपनी उचित-अनुचित बातों का समर्थन कराते रहने) की रक्षा के लिए हर क्षण तत्पर रहूंगा।'

यही है मेरी कुर्सी, जिसे मैं अगले चुनाव के बाद संसद-भवन में रखवाने की तिकड़म सोच रहा हूं। अभी एक बात और शेष है, वह है, जेल-यात्रा की बात! उसके लिए भी मुझे उम्मीद है कि भविष्य में अपनी सत्ताविरोधी हरकतों से उसका भी सुयोग सुअवसर मिल ही जायेगा। इसके बाद तो . . . . .पार्टी का टिकट भी मिलेगा और जनता की सहानुभूति भी!

पता नहीं भगवान पूरा करता है या नहीं मेरा अभियान—'तलाश एक कुर्सी की'! ●

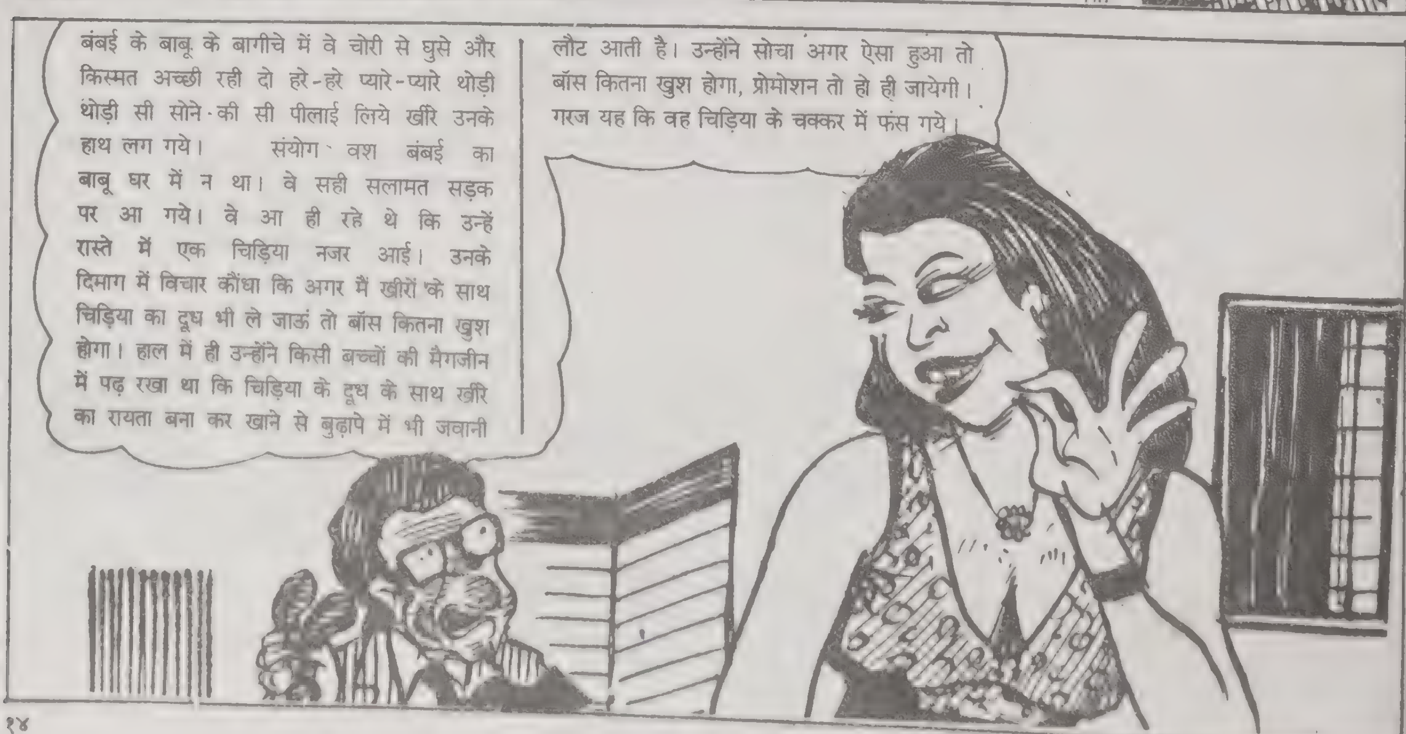

सरल, उत्तम तथा सुन्दर
लिखाई के लिए सदैव
DEECO PEN
DEECO ®
पेन, बॉलपेन, डैस्कपेन और पैन सैट
प्रयोग करें
निर्माता
कपूर पेन एजेन्सीज़
१२, न्यू चांदपुरी बिल्डिंग, बड़ी मार्केट, सदर बाजार
नई दिल्ली-११०००६



रवपूर फिल्मस इन्टरनेशनल
खीरें का चोर
एक समीक्षात्मक पैरोडी
रिफ्यूजी कलर
कलाकार परिचय
अरोश कोमार, मिथुनचक्करभर्ती, बिंदिया गऊ स्वा-मी, हैलअन्न, लीना उदास, पिंचूका पूरव, राजेन्द्र अनाथ, चन्द्रसेखार, भक्तिकपूर और मटन पूरी।
संगीत-सोनिक् खमेहमी गीत-वर्मामालिक
अपहरण, मारधाड़, गाते डिस्को डांसिंग, मिलना, बिछुड़ना, रोना धोना, साजिश से भरपूर एक और चूं चूं का मुरब्बा
निर्माता निर्देशक-ऐश. के. कपूर



खन्ना साहब अपनी कम्पनी के वफादार नौकर और अपने बॉस के खास चमचे थे। बॉस को लंच के साथ खीरे खाने का बहुत शौक था। एक बार बॉस की बीबी लंच बॉक्स में सलाद के साथ खीरे रखना भूल गयीं। बिना खीरे के लंच को देख
बॉस को रोना आ गया। आंखों में आंसू छलछला आये। खन्ना साहब ने बॉस की दयनीय दशा देखी तो उनसे न रहा गया उन्होंने बॉस को दिलासा दिलाया कि जीवन से इस कदर निराश होने की आवश्यकता नहीं है। वे पास के बंबई का बाबू के बंगले के बागीचे से खीरा चुरा कर बॉस के लिये ले आयेंगे। उसी दिन खन्ना साहब को अपना झूठा मैडिकल क्लेम का बिल भी पास करवाना था बॉस से। अतः उसे खुश करना बहुत जरूरी था। खन्ना साहब कमर कस कर खीरे लाने के लिये चल दिये।



बंबई के बाबू के बागीचे में वे चोरी से घुसे और किस्मत अच्छी रही दो हरे-हरे प्यारे-प्यारे थोड़ी थोड़ी सी सोने की सी पीलाई लिये खीरे उनके हाथ लग गये। संयोग वश बंबई का बाबू घर में न था। वे सही सलामत सड़क पर आ गये। वे आ ही रहे थे कि उन्हें रास्ते में एक चिड़िया नजर आई। उनके दिमाग में विचार कौंधा कि अगर मैं खीरों के साथ चिड़िया का दूध भी ले जाऊं तो बॉस कितना खुश होगा। हाल में ही उन्होंने किसी बच्चों की मैगजीन में पढ़ रखा था कि चिड़िया के दूध के साथ खीरे का रायता बना कर खाने से बुढ़ापे में भी जवानी
लौट आती है। उन्होंने सोचा अगर ऐसा हुआ तो बॉस कितना खुश होगा, प्रोमोशन तो हो ही जायेगी। गरज यह कि वह चिड़िया के चक्कर में फंस गये।



बाद में पता लगा कि वह चिड़िया पालतू थी। परायी चिड़िया का दूध चुराने की कोशिश के अपराध में चिड़िया के मालिकों ने खन्ना साहब को अपने तोते के पिंजरे में कैद कर लिया और खीरों पर कब्जा कर लिया।
चिड़िया के मालिक डैनी और खीरा लाल पेशेवर चोर थे। वह दोनों भी खीरे, तोरी, भिंडी, बैंगन, टमाटर और चुकन्दरों के शौकीन थे। उन्होंने खन्ना
साहब को पिंजरे में बन्द क के बाद लिज्जत पापड़ पर खन्ना साहब के मुंह की हूबहू नकल उतारी। डैनी पापड़
अपने चेहरे पर चिपका कर खन्ना साहब बन गया। इसके बाद उन्होंने आस पास के किचन गार्डनों से सब्जियां चुरानी शुरू कीं। सब मुखौटे के कारण, यही समझते रहे कि सारी चोरियां खन्ना ही कर रहा है। खन्ना साहब के बॉस ने भी यही मान लिया कि खीरे खन्ना लालच में आकर खुद खा गया होगा।
खन्ना साहब की बीबी आदर्श भारतीय नारी थी। वह भी यह मानने को तैयार नहीं थी कि उसके पति परमेश्वर चोरी जैसा नीच काम कर सकते हैं। वह दिन रात पति के गम में आंसू बहाती रहती और बीच-बीच में एनाऊंस करती जाती ''वह ऐसा नहीं कर सकते। ये सब झूठ है। मैं उनको अच्छी तरह जानती हूं।'' कई वर्ष बीत गये। खन्ना साहब के लड़के डिशूं कुमार ने मां के सामने हाथ में ककड़ी उठा कर प्रण किया कि वह अपने पिताजी के माथे पर लगा कलंक धो कर ही रहेगा। शहर के सारे ड्राइक्लीनरों की छुट्टी कर देगा। लड़का पेशेवर डिस्को डांसर बन गया ताकि शरीर में तोड़ मरोड़ के लिये लोच आ जाये और कलंक की धुलाई करते समय कमर में मोच न आ पायेगी।
उसे डांस करते देख खीरा लाल की लड़की फीता उस पर मोहित हो गयी। उसने अपना पुराना प्रेमी प्याज के छिलके की तरह उतार कर फैंक दिया। प्रेमी का नाम काना था। चोट खाये प्रेमी ने डिशू से बदला लेने की ठान ली। वह जानी दुश्मन बन गया। अब डिशू कुमार के पास काम बहुत आ गया। एक तरफ बाप का कलंक धोना, दूसरी ओर अपनी प्रेमिका के पुराने प्रेमी से लड़ना और ओवर टाइम में डिस्को डांस करना। इसी बीच खीरा लाल का खून हो जाता है। उसका इलजाम भी उसी के सिर लगता है। नर्तकी का भी कत्ल हो जाता है उसका सन्देह भी उसी पर जाता है। उसकी प्रेमिका फीता भी डाइटिंग करने के लिये उससे रूठ जाती है।
डिशूकुमार इससे नहीं घबराता। वह असली कातिलों के पीछे पड़ जाता है। उसकी प्रेमिका का अपहरण हो जाता है। हीरो, चार डिस्को डांस, एक कव्वाली, एक लिम्बो डांस, चालीस टैंक नष्ट करने, प्रदह F-16 जहाजों को मार गिराने, पांखरण में दूसरा परमाणु परीक्षण करने, काना के पीछे दो एकसोसैट मिसायल छोड़ने और भारीगोली बारी के बाद जंग जीत जाता है। बाप को पिंजरे से छुड़ाता है। असली कातिल व चोर डैनी व काने का
पर्दाफार्श करता है। प्रेमिका को गले लगने पर मजबूर करता है और फोटोग्राफर को फैमिली फोटो खींचने पर मजबूर करता है।

जूली डिसूजा काम की तलाश में

जूली ''डेली लीडर'' के पन्ने पलट रही थी, एक लंबी सांस उसके अंतर्मन से निकली। सामने संगमरमर की मेज़ पर रखे अंडे और टोस्ट पर उसने बेमन से दृष्टि डाली। बेमनी का मतलब यह न था कि जूली को भूख नहीं थी। बात बिलकुल उलटी ही थी. जूली को इतनी अधिक भूख लगी थी कि उस का मन था सामने रखे ढेर सारे नाश्ते को साफ़ कर जाये, चिन्ता यह थी, कि शायद कल यह अंडा टोस्ट भी नसीब न हो पाये।

परंतु बैंक बैलेंस के आखिर में पहुंची महिला अच्छे खाने का सपना नहीं देख सकती। जूली भाग्यवान् थी कि अंडा और टोस्ट का आर्डर तो दे सकती थी और साथ चाय की एक छोटी केतली भी। वही चिन्ता, कल की, जूली को परेशान किये . . .अगर . . . .

उसने ''डेली लीडर''के सफ़ों पर छपे अन्य इश्तहा/रों पर नज़र दौड़ाई।मुख्तसिर बात यह थी कि जूली बेकार थी और हालत नाजुक होती जा रही थी, अभी से इसके पुराने से घर की फटेहाल मालकिन इसे प्रश्नभरी निगाहों से घूरने लगी थी।

''और फिर भी'', जूली ने अपने सिर को आदतन ऊपर उठाते हुए कहा ''और फिर भी मैं अक्लमन्द, सुन्दर और पढ़ी लिखी हूं, इससे ज्यादा किसी को क्या चाहिये ?''

''डेली लीडर'' के अनुसार लोगों को शार्ट हेन्ड टाईपिस्ट चाहिये, जिन्हें लंबा तर्जुबा हो, बिजनेस कंपनियों को ऐसे मैनेजर चाहियें जो अपना कुछ धन काम में लगा सकें, स्त्रियां चाहियें जो मुर्गी पालन के मुनाफे में हिस्से दार बन सकें (यहां भी कुछ धन लगा देखभाल करने वालों की आवश्यकता है।)

''मुझे घर की देखभाल करने में कोई ऐतराज न होगा,'' जूली नें स्वयं से कहा ''पर यहां भी तजुर्बे के बिना कौन काम देगा'' ''हां, हर काम करने वाली लड़कियों को लोग पैसे ही क्या देते हैं''।

उसने फिर से लंबी सांस ली अखबार को अपने सामने ऊपर को कर रख दिया और नौजवान भूखे के समान अंडा टोस्ट खाने में व्यस्त हो गई।

अंडा टोस्ट समाप्त कर उसने दुबारा अखबार उठा, उसे पढ़ना शुरू किया,साथ ही अपनी चाय भी पीती जा रही थी। इश्तहारों के भिन्न-भिन्न कालमों के पढ़ते-पढ़ते जूली ने मन में सोचा यदि उसके पास एक दो हज़ार पाउंड होते तो कठिनाई इतनी न होती। कम से कम सात ऐसे मौके थे—जिनमें से हर एक के द्वारा तीन हजार पाउंड सालाना आसानी से बनाये जा सकते थे। सोचते-सोचते जूली के होंठ भिंच गये।

''यदि मेरे पास दो हज़ार पाउंड होते, तो उन्हें मुझ से अलग करना सम्भव न होता ''वह बुदबुदायी।

''इसमें कोई न कोई चक्कर अवश्य है''वह बोली, ''ऐसी चीजों में हमेशा ही चक्कर होता है, मुझे सावधान रहना होगा. फिर भी—

जिस विज्ञापन ने जूली को चक्कर में डाल दिया था वह इस प्रकार था—

यदि एक नवयुवती पच्चीस और तीस वर्ष के बीच आयु की, आंखें गहरी नीली, बाल बहुत बढ़िया, भौंहें और बरौनियां काली, सीधी नाक, पतला छरहरा बदन, लंबाई पांच फुट सात ईंच, अच्छी नक्काल और अच्छी फ्रेंच बोल लेती हो तो, १०, ऐसप्लेनेडरोड पर ५ और ६ बजे के बीच शाम को पहुंचे, तो उसे इसके फायदे की आशा होगी!



तेजी से जूली ने नज़र अखबार के निचले भाग पर डाली, फिर ऊपर से पढना आरम्भ किया, अखबार तरह तरह के इश्तहारों से भरा पड़ा था कोई पुराने कपड़े खरीदना चाहता था तो कोई अपना सामान बेचने में रुचि रखता था, कोई ज़रूरतमंद, मदद के लिये इश्तहार दे रहा था तो किसी और वजह से, पढ़ते पढ़ते जूली अचानक रुक गई उसने अपना प्याला नीचे रख इश्तहार को दुबारा पढ़ा।

''सब कुछ चक्कर में डालने वाला है, वरना लड़कियां भूल क्यों करें'' वह बोली ''मुझे अवश्य बहुत सावधान रहना होगा। परन्तु ऐसी वैसी बात के लिये इस विज्ञापन में बहुत से नाप तोल हैं। अब सोचना यह है ''अपने माल की परख करती हूं''।

और उसने अपनी समीक्षा आरम्भ की ''आयु पच्चीस से तीस वर्ष—मैं छब्बीस वर्ष की हूं। आंखें गहरी नीली यह ठीक है, बाल

सुन्दर, भौंहे और बरौनियां काली—सब ठीक, नाक सीधी ? हां—काफी सीधी है. कुछ भी हो, तोते जैसी या ऊपर को उठी हुई नहीं है। और मेरा बदन पतला छरहरा है—आज कल के स्टेन्डर्ड से भी। मैं केवल पांच फुट छः इंच की हूं—पर

हाईहील पहन काम चला सकती हूं—मैं नकल अच्छी कर लेती हूं, कोई बहुत बड़ी बात नहीं है, पर मैं लोगों की आवाज की नकलें कर लेती हूं और फ्रैंच में किमी भी फ्रांसीसी महिला के समान बोल लेती हूं। वास्तव में मैं इस विज्ञापन देने वाले के लिये सही सामान हूं। उन लोगों को मुझे देख खुशी से उछल पड़ना चाहिये। जूली डिसूजा जाओ और विजयी हो!''

इरादा पक्का कर जूली ने विज्ञापन को फाड़ अपने पर्स में डाल लिया। फिर नये उत्साह से उसने अपना बिल मांगा।

पांच बजने में दस मिनट पर जूली ऐसप्लेनेर्ड रोड के इलाके में पहुंच चुकी थी। ऐसप्लेनेड रोड दो बड़ी सड़कों के बीच की एक छोटी सड़क है, यह पुरानी परन्तु बड़े लोगों की बस्ती है। १० नंबर का घर आस पास के दूसरे घरों जैसा ही था, जैसे दूसरे घरों में दफ्तर थे वैसे ही इसमें भी थे। उसकी तरफ देख कर पहली बार जूली ने महसूस किया कि नीली आंखों, सुन्दर बालों, सीधी नाक, पतली दुबली, पच्चीस और तीस वर्ष की आयु वाली वही अकेली लड़की न थी। जाहिर है उसका शहर ऐसी लड़कियों से भरा पड़ा था और कम से कम उनमें से चालीस या पचास इस समय १० ऐसप्लेनेड रोड के सामने खड़ी थीं। ''मुकाबला''जूली बोली,''मुझे जल्दी से लाइन में लग जाना चाहिये''।

उसने मोड़ पर से आती तीन और लड़कियों को देखा और जल्दी से लाइन में आ खड़ी हुई। कुछ उनके बाद भी आती रहीं। जूली अपने आस पास की लड़कियों के बारे में सोच सोच अपना मन बहलाती रही। हर एक में उसने कोई न कोई कमी ढूंढ निकाली थी—बरौनियां काले के बजाये भूरी, आखें नीली के बजाये कुछ ग्रे, बालों का रंग कुदरती न हो कर बनाया हुआ, तरह तरह की मजेदार नाक और बदन ऐसे पतले दुबले जो कोई दया कर ही ऐसा कह सकता था 'जूली की हिम्मत बढ़ी'. ''मेरे विचार से मेरा चान्स भी उतना ही है जितना और किसी का ''वह बोली ''पर सोचती हूं यह सब है क्या ? उम्मीद है कोई सुन्दरी समूह गान होगा''।

लाइन धीरे धीरे आगे बढ़ती जा रही थी देखते देखते घर के भीतर से आने वाली लड़कियों का तांता भी शुरू हो गया। कुछ अपने सिर हिला रही थीं तो कुछ खिसयानी हंसी हंस रही थीं।

''अस्वीकृत''जूली प्रसन्न हो बोली ''भगवान करे मेरे अन्दर पहुंचने से पहले ही जगह न भरे।

अब भी लड़कियों की लाइन आगे बढ़ती जा रही थी, उत्सुक लड़कियां अपने चेहरे छोटे छोटे शीशों में देख, नाक पर पाउडर लगा, लिपस्टिक को ठीक कर रही थीं।

''काश! मेरा हैट बढ़िया होता''जूली अपने आप से बोली आखिरकार उसकी बारी आ ही गई। घर के दरवाजे के भीतर एक ओर को एक कांच लगा दरवाजा था, जिस पर मैसर्स कुथबर्ट सन्स लिखा था। इसी दरवाजे से लड़कियां एक एक कर भीतर जा रही थीं। जूली की बारी आई, वह लंबी सांस ले भीतर घुस गई।

अन्दर एक बाहरी दफ्तर था, जाहिर है क्लर्कों के लिये बना था, अन्त में एक और कांच का दरवाजा था, जूली को उस के भीतर जाने को कहा गया और उसने ऐसा ही किया। अब वह एक और छोटे कमरे में पहुंच गई थी। यहां एक बड़ा सा डेस्क रखा था जिसके पीछे एक तेज निगाह वाला अधेड़ उम्र का विदेशी सी मूछों वाला व्यक्ति बैठा था। उसने जूली को ऊपर से नीचे तक देखा और बांई ओर एक द्वार की ओर इशारा किया। ''कृपया, भीतर जा कर प्रतीक्षा करो'' उसने कड़क आवाज में कहा, जूली भीतर चली गई, जिस कमरे में वह घुसी वह पहले ही भरा था। पांच लड़कियां वहां बैठी थीं, सब बहुत अकड़ कर बैठी थीं और एक दूसरे को घूर रही थीं। जूली को साफ पता चल गया कि चुनी जाने वाली लड़कियों में उसका नम्बर आ गया है और उसकी आशा बंधी। परन्तु उसे यह मानना ही पड़ा कि उसी की तरह यह पांचों लड़कियां भी विज्ञापन की शर्तों पर पूरी उतरती दिखाई दे रही थीं।

समय बीत रहा था लड़कियों की लाइन जाहिर है बाहर के दरवाजे के अन्दर बाहर हो रही थी। अधिकतर को गलियारे में खुलते एक दरवाजे से अस्वीकार कर बाहर भेज दिया गया था, पर यदा कदा एक दो इनके विशेष समूह में भी आ मिलती थीं। साढ़े छः बजे भीतर के कमरे में चौदह लड़कियां इकट्ठी हो गई थीं।

जूली ने बाहर के दफ्तर में कुछ अवाजें सुनी और विदेशी सा दिखने वाला सज्जन, जिसका जूली ने उसकी फौजी मूंछ के कारण मन ही मन कर्नल नाम रख लिया था, दरवाजे में दिखाई दिया।

''मैं आप सब महिलाओं से कृपया एक एक कर मिलूंगा, आप सब के आने की तरतीब से मेहरबानी करके'' वह बोला।

जूली इस तरतीब में छठी थी, उसकी बारी आने में लगभग बीस मिनट लगे। कर्नल अपने हाथ कमर के पीछे किये खड़ा था। उसने वहां जूली से जल्दी जल्दी कुछ प्रश्न पूछे, उसके फ्रेंच के ज्ञान की जांच की और उसकी लम्बाई नापी।

बन्द करो बकवास



फ़ेंच में उसने कहा, "शायद तुम ठीक हो मैं कह नहीं सकता, पर इसकी सम्भावना है"।

क्या मैं पूछ सकती हूं काम क्या है?

"जूली ने साफ साफ पूछा।

उसने कंधे उचका दिये। "वह मैं तुम्हें अभी नहीं बता सकता। यदि तुम चुन ली गई तो तुम्हें सब मालूम हो जायेगा"। "यह सब बड़ा ही रहस्यमय है" जूली ने ऐतराज करते हुए कहा "मैं किसी भी काम के विषय में पूरी जानकारी लिये बिना हां नहीं कर सकती, क्या स्टेज का काम है यदि मैं पूछ सकती हूं तो?"

"स्टेज!" बिलकुल नहीं"।

"ओह!" जूली ने कुछ अचंभित हो कहा। वह जूली की ओर ध्यान से देख रहा था। "तुम ... हो न? और समझबूझ!"

"मुझ में काफी अक्ल और समझबूझ है" जूली ने धीरज से कहा "तनख्वाह क्या होगी"?

"तनख्वाह पन्द्रह दिन के काम के लिये दो हजार रुपये होंगे"।

"ओह!" जूली ने धीरे से कहा।

वह इतनी बड़ी रकम एक साथ मिल जाने के ख्याल से चकरा सी गई थी।

कर्नल ने बोलना आरम्भ किया। "एक और महिला को मैं पहले ही चुन चुका हूं तुम और वह दोनों ही हमारी जरूरत के मुताबिक हो। हो सकता है और भी हों जिनसे मैं अभी मिला नहीं हूं। तुम्हें आगे क्या करना है मैं बता देता हूं। तुम्हें अकबर होटल पता है?"

जूली देखती रह गई। इस शहर में ऐसा कौन है जो अकबर होटल को न जानता हो। शहर की माल रोड पर स्थित वह होटल जहां राजे रजवाड़े साधारणतयाही आते जाते हैं।आज ही जूली ने महारानी शीबा के होटल में आगमन का समाचार पढ़ा था। वह शहर में रियासत के बेघरों की मदद के लिये एक बड़े बाजार का उद्घाटन करने आई थीं और निस्संदेह अकबर होटल में ही ठहरी थीं।

"हां" जूली ने कर्नल के प्रश्न का उत्तर दिया।

"बहुत अच्छा, वहां जाओ और दीवान सैंडर्स को पूछना अपना कार्ड भेज देना—तुम्हारे पास कार्ड तो है न?"

जूली ने कार्ड निकाला, कर्नल ने कार्ड ले कर उसके कोने पर छोटा सा 'पी' लिख दिया, और जूली को वापिस कर दिया।

इससे दीवान साहब तुम से ज़रूर मिल लेंगे, उन्हें मालूम हो जायेगा तुम मेरे पास से आई हो। अन्तिम निर्णय उनके और एक और के ही हाथ में है। यदि उन्हें तुम पसन्द आ गईं तो वे तुम्हें सब कुछ बता देंगे तब तुम चाहो तो हां या ना कर सकती हो। ठीक है?"

"बिलकुल ठीक है"। जूली ने उत्तर दिया। ज्यों ही जूली इमारत से बाहर सड़क पर पहुंची, सोचने लगी, "अभी तक तो कोई चक्कर दिखाई नहीं दे रहा"। परन्तु चक्कर है जरूर क्योंकि कोई भी बिना बात पैसा नहीं देता अब तो केवल अपराध ही है! इसके सिवा कुछ भी और नहीं बचा!"

उसकी हिम्मत बढ़ी, थोड़े बहुत अपराध से जूली को कोई एतराज नहीं था। आजकल समाचार पत्र अक्सर महिलाओं द्वारा अपराध करवाये जाने से भरे पड़े हैं। जूली ने भी कोई और काम न मिलने की स्थिति में यह रास्ता अपनाने की कई बार सोची थी।

थोड़ी सी अन्दरुनी घबराहट के साथ जूली सुन्दर सुसज्जित अकबर होटल के हॉल में दाखिल हुई। इस समय एक बार फिर जूली के मन में एक बेहतर हैट की इच्छा जाग्रत हुई।

वह हिम्मत कर रिसेप्शन पर गई, और अपना कार्ड दिखा दिवान सैंडर्स को बिना किसी हिचक पूछा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि क्लर्क ने उसे कुछ कौतुहल से देखा था। फिर भी उसने जूली का कार्ड ले कर एक छोटे पेज बोय को धीमी आवाज में कुछ हिदायतों के साथ दिया। स्वर धीमा होने के कारण जूली कुछ सुन न पाई क्लर्क ने क्या कहा था। शीघ्र ही पेजबोय वापिस आया और जूली से साथ चलने को कहा। वे लिफ्ट से ऊपर जा एक लम्बे गलियारे से हो एक डबल दरवाजे के सामने पहुंचे जिस पर लड़के ने दस्तक दी। अगले ही क्षण जूली एक बड़े कमरे में एक लंबे, पतले, सफेद दाड़ी वाले व्यक्ति के सामने खड़ी थी जो जूली का कार्ड हाथ में लिये था।

"मिस जूली डिसूजा" उसने धीरे-धीरे पढ़ा "मैं दीवान सैंडर्स हूं"।

उसके होठ एक मुस्कराहट में खुले पर मुस्कुराहट दिखाई न दे पाई केवल सफेद दांत ही नज़र आये। खुशी का कोई इज़हार नहीं हुआ।

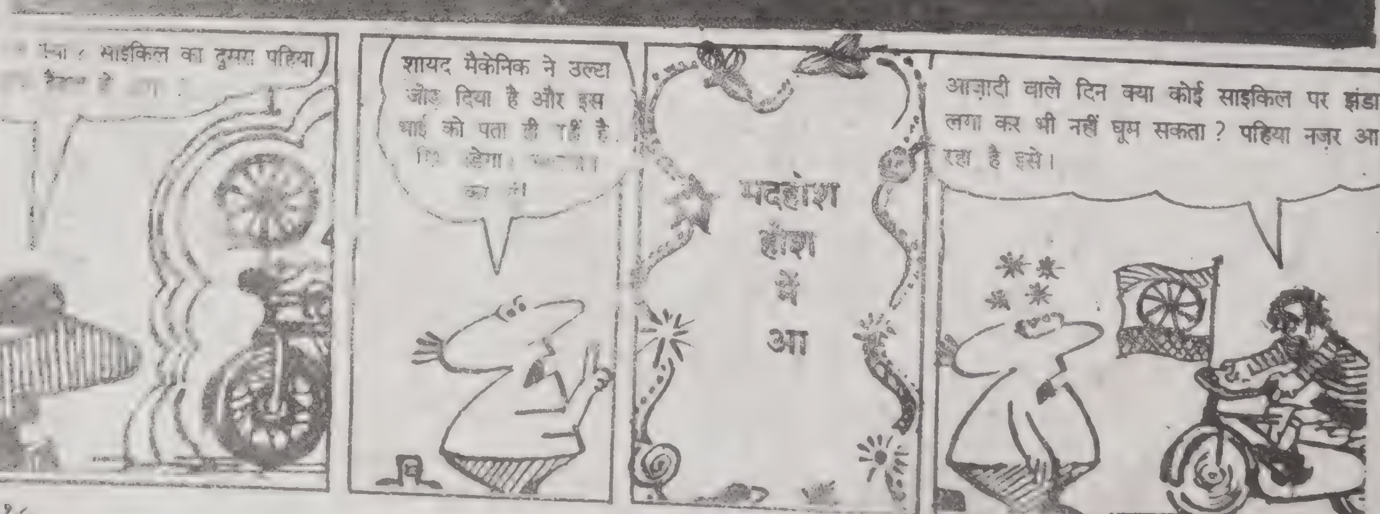
"मेरे विचार से तुमने हमारे विज्ञापन के उत्तर में प्रार्थना पत्र दिया है कर्नल करानिन ने तुम्हें यहां भेजा है "दीवान बोला।

"वह कर्नल था" जूली अपने अनुमान पर प्रसन्न हुई परन्तु उसने धीरे से सिर हिलाया!

"यदि मैं तुम से कुछ प्रश्न पूंछू तो तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा"?

पर उत्तर के लिये रुके बिना ही दीवान प्रश्न पूछने लगा। जूली के उत्तरों से संन्तुष्ट हो उसने तीन बार सिर हिलाया।

"मैडमोसेल मैं अब तुमसे द्वार तक जाकर धीरे धीरे वापिस आने को कहता हूं।"



''शायद यह मुझे पुतला बनाना चाहते हैं,'' जूली ने दीवान के कहे कार्य को करते करते हुए सोचा, ''परन्तु यह एक पुतले को दो हजार रुपये क्यों देंगे, फिर भी अभी मैं कोई प्रश्न नहीं पूछती''।

दीवान सैंडर्स की त्योरियां चढ़ी हुई थीं, मेज पर अपनी उंगलियां बजा रहा था। अचानक वह उठा और बराबर के कमरे का दरवाजा खोल किसी से कुछ बोला। वह वापिस आ अपनी कुर्सी पर बैठ गया। बराबार के कमरे का दरवाजा खोल एक नाटी सी अधेड़ महिला कमरे में आई। वह मोटी और बदसूरत थी परन्तु फिर भी एक विशेष व्यक्ति जैसी प्रतीत होती थी।

''अच्छा! अन्ना मारटीलोवा, तुम्हारी इसके बारे में क्या राय है?''

महिला ने जूली को ऊपर से नीचे तक ऐसे देखा मानों वह मोम की कोई मूर्ति हो। किसी प्रकार के किसी अभिवादन करने का दिखावा तक उसने नहीं किया।

''इससे काम चलाया जा सकता है, वास्तव में शक्ल तो कुछ खास नहीं मिलती, पर इसका शरीर और बालों का रंग बहुत ही अच्छा है, और सभी प्रतियोगियों से अच्छा। तुम्हारा क्या ख्याल है फियोडोर वैस्कोविच?''

''तुम्हारा ख्याल बिलकुल ठीक है, अन्ना मारटीलोवा''।

''क्या यह फ्रेंच बोल लेती है?''

''इसकी फ्रेंच बहुत उत्तम है''।

जूली बिलकुल पुतले के समान महसूस कर रही थी, यह दोनों ही अजीब आदमी भूल गये थे कि वह भी एक मानव है।

''परन्तु क्या यह समझबूझ से काम ले लेगी? महिला लड़की की तरफ बुरी तरह से त्योरी चढ़ा कर बोली।

''यह राजकुमारी पोपर्सी है'' दीवान सैंडर्स ने फ्रेंच में कहा ''वह जानना चाहती है कि तुम समझबूझ से काम ले लोगी?''

जूली ने अपना उत्तर राजकुमारी को ही दिया। ''स्थिति को जाने बिना मैं कोई वायदा नहीं कर सकती''। ''यही वह भी कहती है, वह नन्हीं भीतर ''महिला ने कहा ''मेरे विचार से यह 'अक्लमंद है फियोडोर वैसकोविच, औरों से अधिक, लड़की मुझे बताओ क्या तुम में हिम्मत भी है?'

जूली ने कुछ चकराते हुए कहा ''मुझे नहीं मालूम, मुझे मार खाना अच्छा नहीं लगता, पर मैं सह लेती हूं''।

''ओह मेरा यह मतलब नहीं था, तुम खतरे से तो नहीं घबराती?''

''ओह! खतरा, उसकी मुझे कोई परवाह नहीं है'' जूली बोली।

''और तुम गरीब भी हो धन भी कमाना चाहोगी?''

''मुझे आज़मा कर देख लीजिये,'' जूली ने कुछ आशा से कहा, दीवान सैन्डर्स और राजकुमारी पोपर्सी ने एक दूसरे की ओर देखा फिर दोनों ने एक साथ सिर हिलाया।

''क्या मैं स्थिति समझा दूं, अन्ना मारटीलोवा?'' पहले ने पूछा ''हर हाईनस स्वयं समझाना चाहती हैं''।

''यह बेकार और बेअकली की सी बात है''।

''कुछ भी हो, उनका यही आदेश है, जैसे ही तुम लड़की से निपट लो, लड़की को भीतर लेजाने का हुक्म है मुझे'' सैन्डर्स ने कंधे उचकाये, जाहिर था उसे यह बात पसंद नहीं आई थी। पर यह भी साफ था, कि हुक्म उदोली की उसकी कोई मन्शा नहीं थी, और वह जूली से बोला। ''राजकुमारी पोपर्सी तुम्हें महारानी शीबा से मिलवाने ले जा रही हैं घबराना मत''।

'जूली वास्तव में बिलकुल भी घबरा नहीं रही थी उल्टे उसे खुशी थी कि उसे भी एक

शेष पृष्ठ ४२ पर



सिलबिल पिलपिल और
१५ अगस्त
भाई जी जो गाम से चिट्ठी आई है उसका ब्यौरा सुनोगे तो खुशी के मारे थमारा थोबड़ा और खोपड़ा ऐसे चमकेगा जैसे स्टेनलैस स्टील का लोटा और कटोरा हो। हमारे गाम की पंचायत ने हमको एक अर्जी भेजी है कि इस साल के प्रंद्रह अगस्त को वह गाम की चौपाल में हम से झंडा फहरवाना चाहते हैं।
काश, लालकिला म्हारे गाम मा होता।
तुलसी दास जी ने सच ही कहा था कि भगवान के घर मां देर है अन्धेर नहीं। आखिर कार हमने देश की जितनी सेवा करी है उसका फल मिल ही गया। जनता ने हमको भारी इज्जत बख्शी है।
थम लोग मेरे याड़ियों को कम न समझना। इन्होंने देश की जो सेवा की है वह प्लैटिनम के शब्दों में लिखने लायक है। इन्हीं के डर के मारे फूलन देवी दिल्ली में नहीं आ रही है वर्ना वह कब की आ गयी होती और ......
बुद्धा जयन्ती पार्क पर अपना कब्जा जमा लिया होता। दिल्ली में बैंकों में जितने डाके पड़े रहे हैं वह संख्या इन्हीं की मेहरबानी से है। ये न होते तो
दिल्ली के बैंकों से सारा रुपया डाकू लूट कर ले गये होते। अब थम लोगों को एक बात बताऊंगा कि जो चिट्ठी इनको मिली है वह वास्तव में मैं ने लिखी है ताकि इनका हौसला ऊंचा बना रहे। ये रोज ही रोते रहते थे कि इन्होंने इतना काम किया लेकिन अब तक उसका फल इनको नहीं मिला। वीरचक्र मिला, न किसी सरकारी अंडर टेकिंग की चेयरमैन शिप।
अब देखो यह खुशी के मारे अपना क्या हाल बना रहे हैं। सिलबिल खुशी के आंसू ऐसे रो रहा है जैसे कमेटी का पाइप फट गया हो। गला भर्रा गया है ....
रो रो कर इसने अपने फ्लैट को हिन्द महासागर बना दिया है और मुझे कमरों में आने जाने के लिये बोट का प्रयोग करना पड़ रहा है। अमरीका को पता लगा गया तो हमारे फ्लैट में भी पांचवें बेड़े का अड्डा बना लेगा।



और पिलपिल की धुआंधार बल्लेबाजी तो देखते ही बनती है। जब यह ज्यादा खुश हो जाता है तो पाइप पीने लग पड़ता है। मुंह से चिम्नी की तरह धुआं उगलता है। इस बार इसे ज्यादा हार्स प्रावर की खुशी प्राप्त हुई है इसलिये यह खुद ही वर्जिनिया टोबेको का धुआं बन कर हमारे कमरे में आवारा बादल की तरह तैर रहा है।
भइयों और अनुपस्थित बहनों, अभी इतना उतावला बनने की जरूरत नहीं है। कहावत है कि ''हरी मेकस करी''। अंग्रेजी की इस कहावत का अर्थ जानते हो?
झंडा फहराने के लिये आपको तैयारी भी तो करनी है। इस तरह थोड़े ही होगा कि स्लीपिंग सूट में ही बिस्तर से उठ कर चले गये और डोरी खींच कर झंडा फहराया और जय हिन्द का नारा लगा कर बैठ गये और बीड़ी पीने लग गये।
हरी राम ने कढ़ी बनाई और जल्दवाजी में नमक डालना भूल गया।
हां
इस चूहे ने अच्छी याद दिलाई। हमारे पास तो खद्दर के कपड़े भी नहीं हैं उस दिन के लिये तो कुर्ता और धोती चाहिये।
हम लोग शहर में आकर धोती बांधने की कला ही भूल गये हैं। अब हमें जाकर बाबू जगजीवन राम जी या चौधरी चरण सिंह से सीखना पड़ेगा।
झंडा फहराने के बाद हमें इस्पीच भी तो देना पड़ेगी। सब से जरूरी चीज तो भाषण है तालियां तो भाषण के ऊपर ही बजती हैं। हम दोनों में से जिसका भाषण अच्छा होगा वही झंडा फहरायेगा।
हां! मुझे सावधानी से काम लेना है कहीं गंजा मुझसे बाजी न मार ले जाये। मैं प्रधानमंत्री की नकल करूंगा फिर जीत जाऊंगा।
भाइयों और बहनों; एक बार मैं फिर आपके सामने १५ अगस्त के इस शुभ अवसर पर आपसे कुछ कहने के लिये खड़ी हुई हूं। आपको याद होगा कि आज से ३५ साल पहले इसी शुभ दिन पर मेरे पिता जी के सामने अपनी बागड़ी भैंस बन्तों ने एक बछड़े को जन्म दिया था वह बछड़ा आज बहुत बड़ा भैंसा बन कर आपके खेतों की सरसों की खेती का कल्याण कर रहा है। पिछले साल उसने चाचा रामजोत को सींग मार दिया था



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

क्यों और कैसे

प्र० : क्या आप बता सकते हैं कि हाथी के शरीर में कितना बल होता है?

उ० : लगभग ग्यारह फुट ऊंचा बड़ा हाथी छः या सात टन वजन का होता है। बोझा ढोने की उसकी ताकत भी थोड़ी दूर जाने के लिये १२ हंड रेडवेट होती है जिसकी मानव शक्ति में तीस आदिवासियों से तुलना की जा सकता है।

हाथियों का अपूर्व बल मनुष्य जाति की अच्छी सेवा में लगा हुआ है। एशिया और अफ्रीका में बहुत वर्ष पूर्व से ही हाथियों को पकड़ कर पालतू बनाया जा चुका था। यहां शिक्षा प्राप्त करने के बाद हाथी तरह-तरह के ऐसे कार्य कर लेता है जो विकसित देशों में आधुनिक मशीनों से किये जाते हैं। हाथी बन्दी दशा में गर्भ धारण नहीं कर पाते इस कारण अधिकतर को जंगलों से पकड़ कर ही ट्रेन्ड किया जाता है।

एक बलवान बोझा खींचने वाला घोड़ा अपने वज़न से लगभग पांच गुना वजन खींच सकता है मनुष्य की थोड़ी दूर तक खींच ले जाने की शक्ति भी करीब-करीब इतनी ही समझी जा सकती है।

अद्‌भुत बात है कि कीड़े, मकोड़ों की खींचने की शक्ति मानव, घोड़े और हाथी से काफ़ी अधिक होती है। कीड़ों के साथ कुछ परीक्षण करने पर पता चला है कि एक ब्लो-फ्लाई अपने वजन से १७० गुना वज़न खींच सकती है। ज़मीन पर चलने वाला 'बीटल' जो ब्लोफ्लाई से छः गुना भारी होता है, अपने वज़न का १८२ गुना वज़न खींच पाया जो कि ब्लोफ्लाई से कुछ ही अधिक है।

अजीब बात यह है कि कीड़ा जितना छोटा होता है उसकी खींचने की ताकत उतनी ही अधिक होती है। ब्लोफ्लाई से आधे वज़न का ईयरविग कीड़ा तो पूरा हरकुलिस ही निकला क्यों कि जो वज़न उसने खींचा वह उसके अपने वज़न से ५३० गुना था।

*

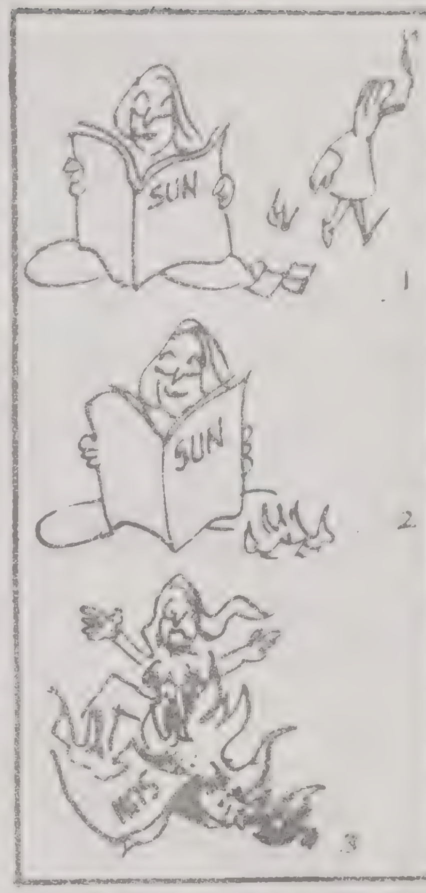
प्र० : क्या पौधे महसूस कर सकते हैं?

उ० : अधिकतर पौधे अधिक प्रकाश ग्रहण करने के लिये या तेज़ चमकीली धूप से बचने के लिये अपनी स्थिति में थोड़ा सा परिवर्तन कर लेते हैं। जब हम किसी खिड़की में जिरेनियम का पौधा उगाते हैं तो उसके पत्तों वाली टहनी हल्की सी मुड़ जाती है जिससे पत्ते खिड़की की ओर मुंह किये होते हैं जिससे अधिक से अधिक उपलब्ध प्रकाश ग्रहण किया जा सके।

यह मोड़ कमरे के भीतर और बाहर के प्रकाश के अन्तर के कारण होता है। आस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला यूक्लिपटिस का पेड़ 'बीच वृक्ष' जो बहुत घना साया फैलाता है का बिलकुल उल्टा है। यूक्लिपटिस पेड़ की पत्तियां तेज़ धूप से बचने के लिये पड़ी अवस्था के बजाये खड़ी अवस्था में आ जाती हैं। इस प्रकार पत्तियों के केवल किनारे ही दोपहर की तेज़ धूप के संपर्क में आते हैं इसी कारण उनकी परछाई भी बहुत ही कम पड़ती है।

'लेट्रूका स्कारिओला भी सीधी धूप से बचने के लिये पत्तियों को मोड़ लेता है। इसे 'कम्पास प्लांट' भी कहते हैं क्योंकि देखा गया है कि इसकी पत्तियों के सिरे सदा उत्तर दक्षिण की ओर पोइंट करते हैं और पत्तियों के ब्लेड पूर्व और पश्चिम का सामना करते हैं जिससे उगते और डूबते सूरज की कमजोर किरणों का भी लाभ उठा सकें। 'पाइलेट वीड' एक और कम्पास प्लांट होता है यह उत्तरी अमरीका के जंगलों में मिलता है और राह भूले शिकारी इत्यादि इन क्षेत्रों में इसकी सहायता से दिशा ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु यही पौधा जब सीली और छायादार स्थानों में उगाया जाता है जहां सूरज की सीधी किरणों से पत्तों को हानि पहुंचने का डर नहीं होता इसके पत्ते खड़ी स्थिती में मुड़ते नहीं वरन् धरती के समतर रहते हैं।

इन्डियन टेलीग्राफ प्लांट बहुत तेज़ धूप में बहुत ही अजीब व्यवहार करता है। यह भारत, श्रीलंका तथा ईस्ट ईन्डीज की उपज है इसमें दो छोटी आगे की पत्तियां और एक टरमिनल पत्ती होती है। तेज़ प्रकाश में छोटी आगे की पत्तियां ऊपर नीचे और दायें बायें हिलती हैं जब कि बड़ी पत्ती ऐसी ही दिशा में कुछ कम हिलती है। यह पत्तियों का हिलना नंगी आँख से आसानी से देखा जा सकता है, यह हिलना दो तीन मिनट तक चलता रहता है, फिर बन्द हो जाता है और हिलना दुबारा आरम्भ हो जाता है। किसी को भी मालूम नहीं यह पौधा ऐसा व्यवहार क्यों करता है क्योंकि अंधेरा होते ही पत्तियों का हिलना बन्द हो जाता है और पत्तियां खड़ी स्थिति में आ जाती हैं। परन्तु ऐसा अनुमान है कि हिलकर यह पौधा तेज़ धूप में अधिक गर्म होने से अपनी रक्षा करता है।



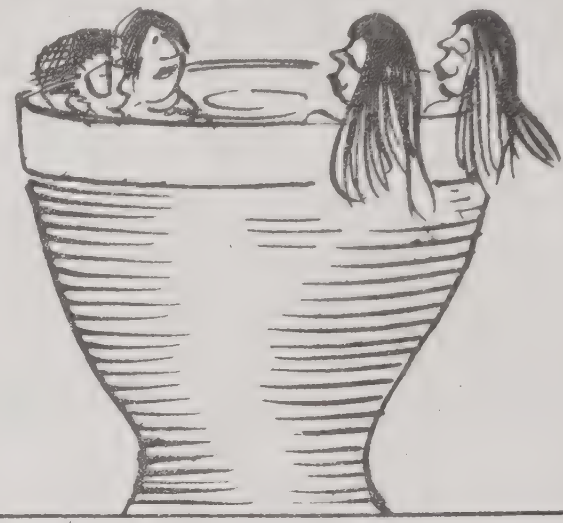
कई पौधे ऐसे होते हैं जो छूने को महसूस कर लेते हैं। भारत में छुईमुई नामक एक पौधा ऐसा ही पौधा है जिसे यदि छू लिया जाये तो पत्तियां सिकुड़ जाती हैं और टहनी नीचे को मुड़ जाती हैं। पत्तियों भरी डंडी का यूं झुक जाना एक अद्‌भुत मकेनिज़्म के कारण होता है। पत्तियों के टहनी की जड़ में जहां यह तने से जुड़ी होती हैं एक कुशन जैसा उभार होता है जिसका मध्य सख्त होता है जिसके चारों ओर पतली सी सैल की दीवार होती है जिसमें पानी भरा रहता है इस उभार को 'पलवीनस' कहते हैं। पौधे को छूने पर, प्रभाव पलवीनस को पहुंचता है जो जीवित तत्व प्रोटोपलास्म के जरिये पत्तियों और टहनी से हो कर आता है इसके परिणाम स्वरूप पलवीनस के निचले भाग के सैलों से पानी पौधे के ऊपरी भाग को दौड़ता है जिससे पत्ते और टहनी इतने भारी हो जाते हैं कि उसका भार नहीं सहन कर पाते फलस्वरूप नीचे को झुक जाते हैं। कुछ देर बाद पानी वापिस निचले भाग में चला जाता है और पत्तियां और टहनी अपनी पूर्वास्था में आ जाते हैं।

क्यों और कैसे?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

काश ऐसे होते ये उपकरण

हम दैनिक जीवन में बहुत सी इलैक्ट्रॉनिक चीजें देखते हैं। पढ़ते हैं। उनके उपयोग भी जानते हैं। इन उपकरणों में निम्न गुण भी होते तो क्या कहने थे—

मिक्सर लड़के और लड़कियों को आपस में मिक्स करवाने का शुभ कार्य भी करता। अपने यहां लड़के लड़कियां आसानी से आपस में मिक्स नहीं हो पाते।



वजन वाली मशीन बातों का भी वजन करती। दो आदमियों में बहस हुई और दोनों मशीन के पास जाते। मशीन बताती किसकी बात में ज्यादा वजन है।



कैल्क्युलेटर यह हिसाब करने में भी समर्थ होते कि कौन कितने पानी में है। लड़कियां प्रेमियों का चुनाव कैल्क्युलेटर की सहायता से करतीं।



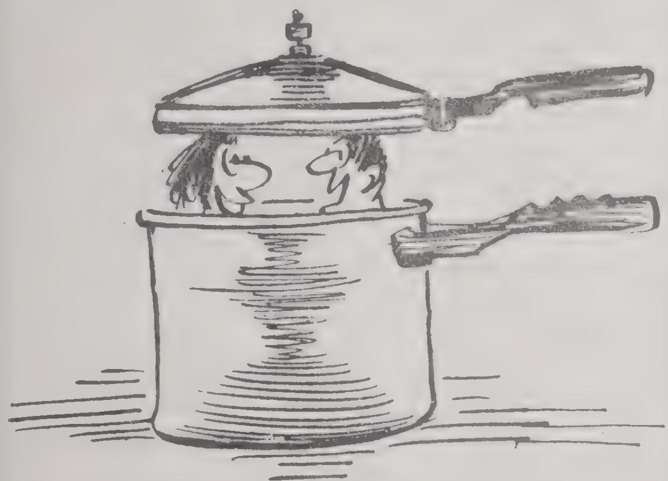
ब्रैथ एनेलाइजर की तरह ट्रुथ एनेलाइजर भी होता। पति देर से घर आये। कारण मुंह से सामने लिफाफा रखकर बोले। पत्नी लिफाफा सील कर लेब्रोरेट्री को भेजेगी, रिपोर्ट बतायेगी कि उसमें कितने प्रतिशत सचाई है और कितना झूठ।



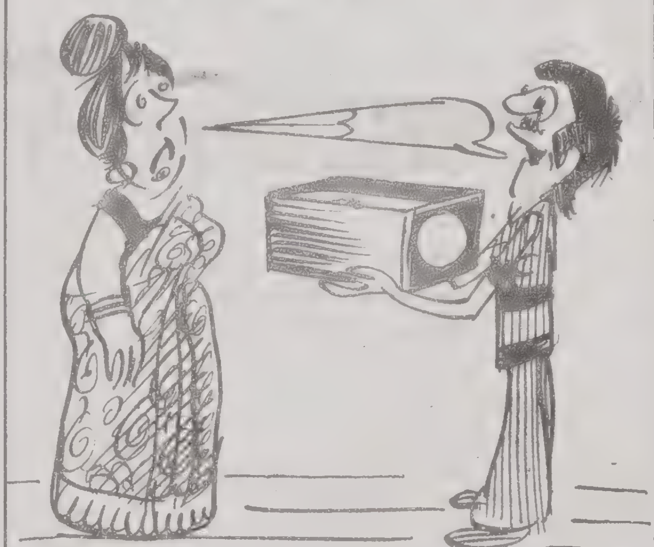
प्रेमिका जो बिजली गिराती है उसे मापने के लिये भी मीटर होता तो पता लगता आप कितने बोल्टेज के झटके खा रहे हैं। वैज्ञानिक युग में हर काम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से होना चाहिए।



प्रैशर कुकर में यह गुण होता कि दो व्यक्तियों को उस में बिठा दिया जाता और उनकी आपस में खूब दाल गलती। बैर और शत्रुता समाज में घट जाती।



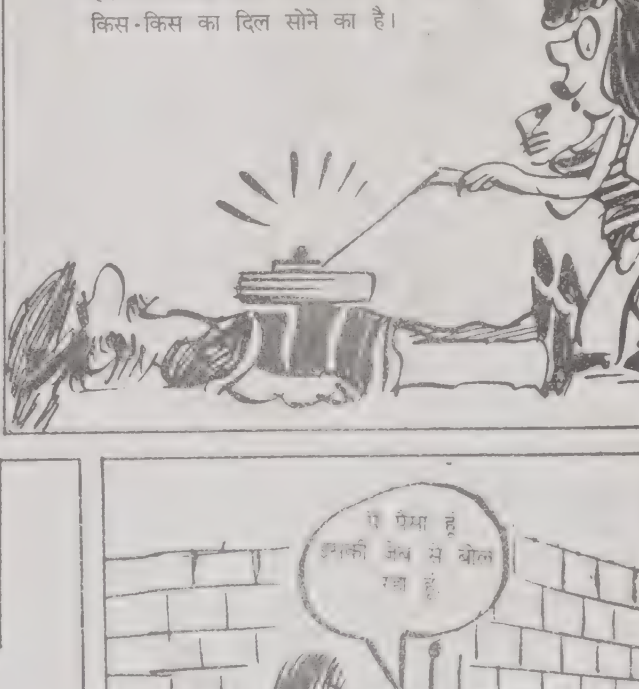
पैंसिल तराश में बात तराशने का गुण भी होता। सवालों के जवाब इसमें खूब पैने करके पैने जवाब दे पाते।



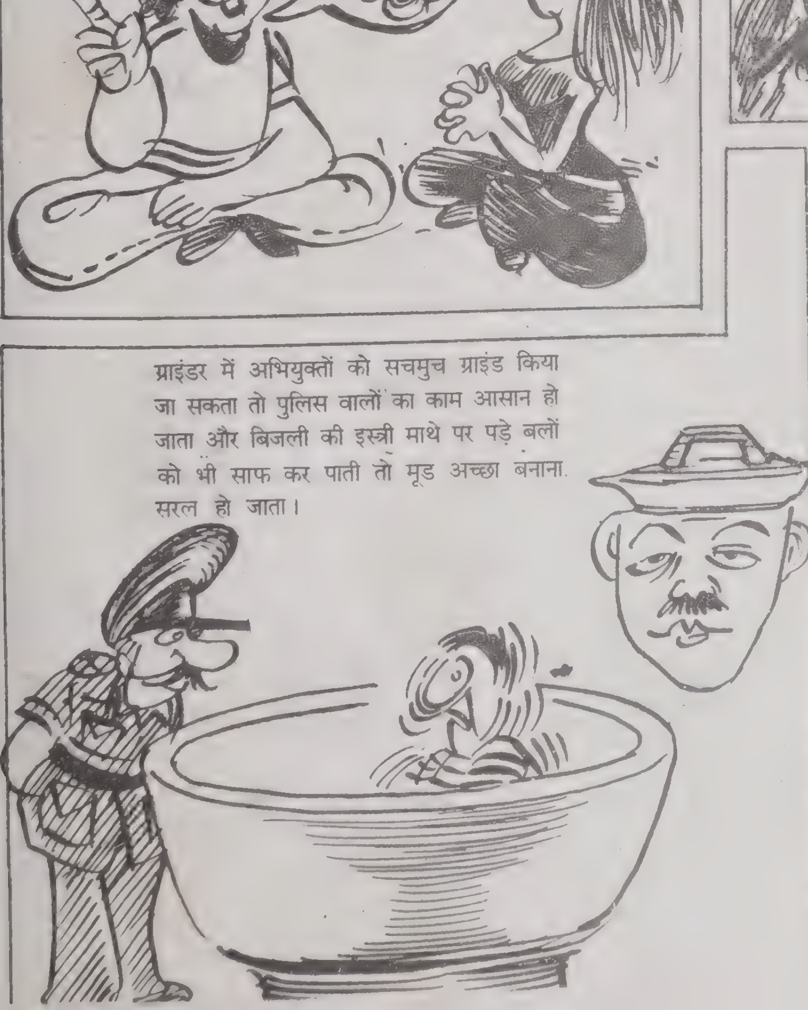
प्रेम और वादों पर IS की मोहर लगाने का तरीका निकल आता तो प्रेम में विश्वास बढ़ जाता। वादे सच्चे लगते।

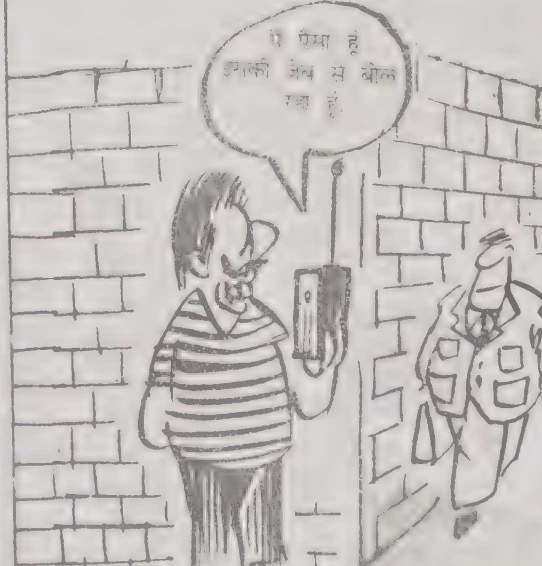


मैटल डिटेक्टर धातु की उपस्थित का पता देता है। क्या अच्छा होता वह यह भी बता पाता कि किस-किस का दिल सोने का है।



ग्राइंडर में अभियुक्तों को सचमुच ग्राइंड किया जा सकता तो पुलिस वालों का काम आसान हो जाता और बिजली की इस्त्री माथे पर पड़े बलों को भी साफ कर पाती तो मूड अच्छा बनाना सरल हो जाता।





कहते हैं पैसा बोलता है। ऐसा रिसीवर बनता जो पैसों के बोलों को पकड़ कर सुना पाता। पता लगता किस दोस्त के पास पैसे हैं जरूरत हो तो उधार मांगा जा सकता है।

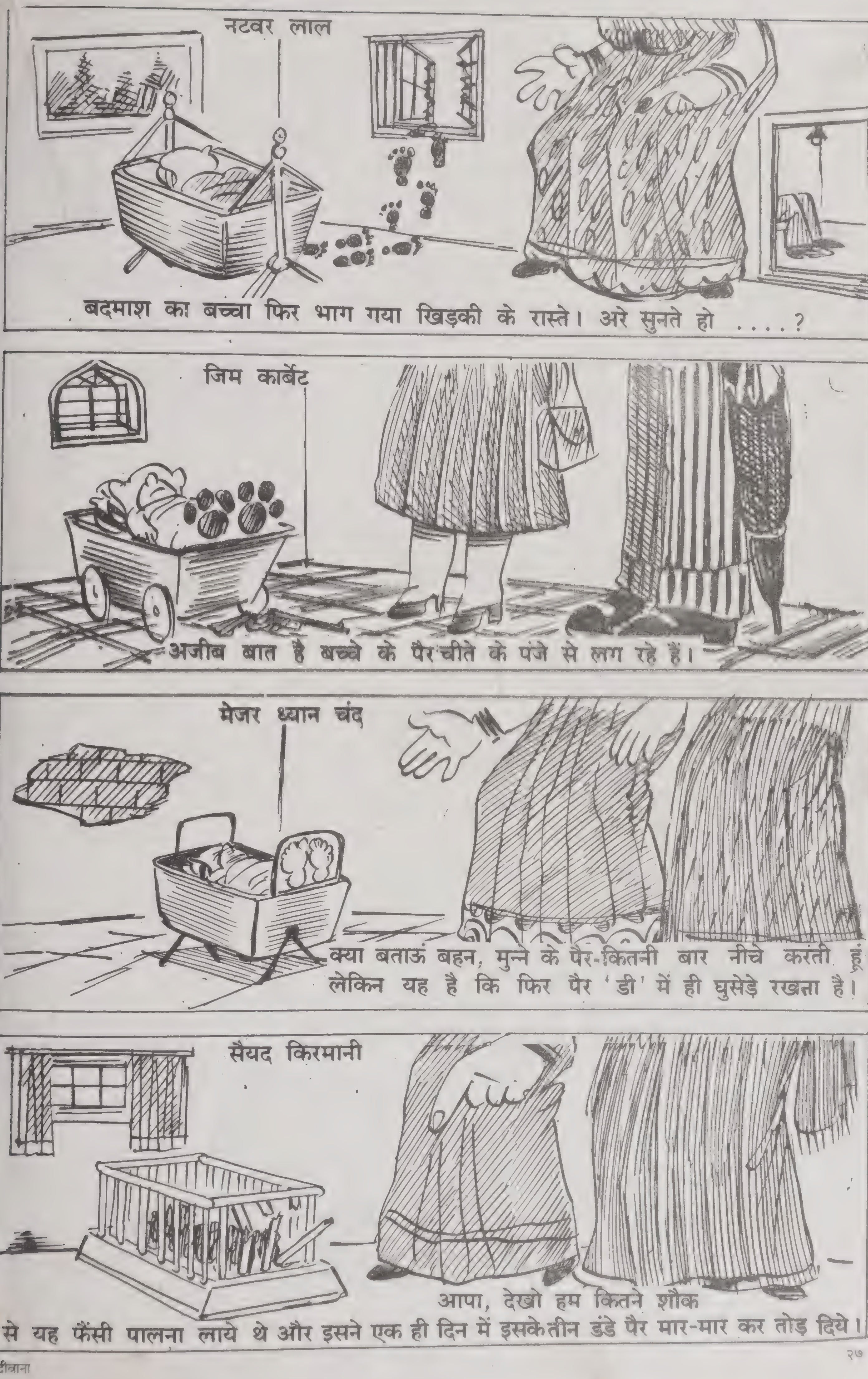
सपूतों के पैर पालने में

कहावत है। ठीक ही होगा। अगर यह ठीक है तो निम्न सपूतों के पैरों ने पालने में ऐसे - ऐसे करिश्मे दिखाये होंगे?



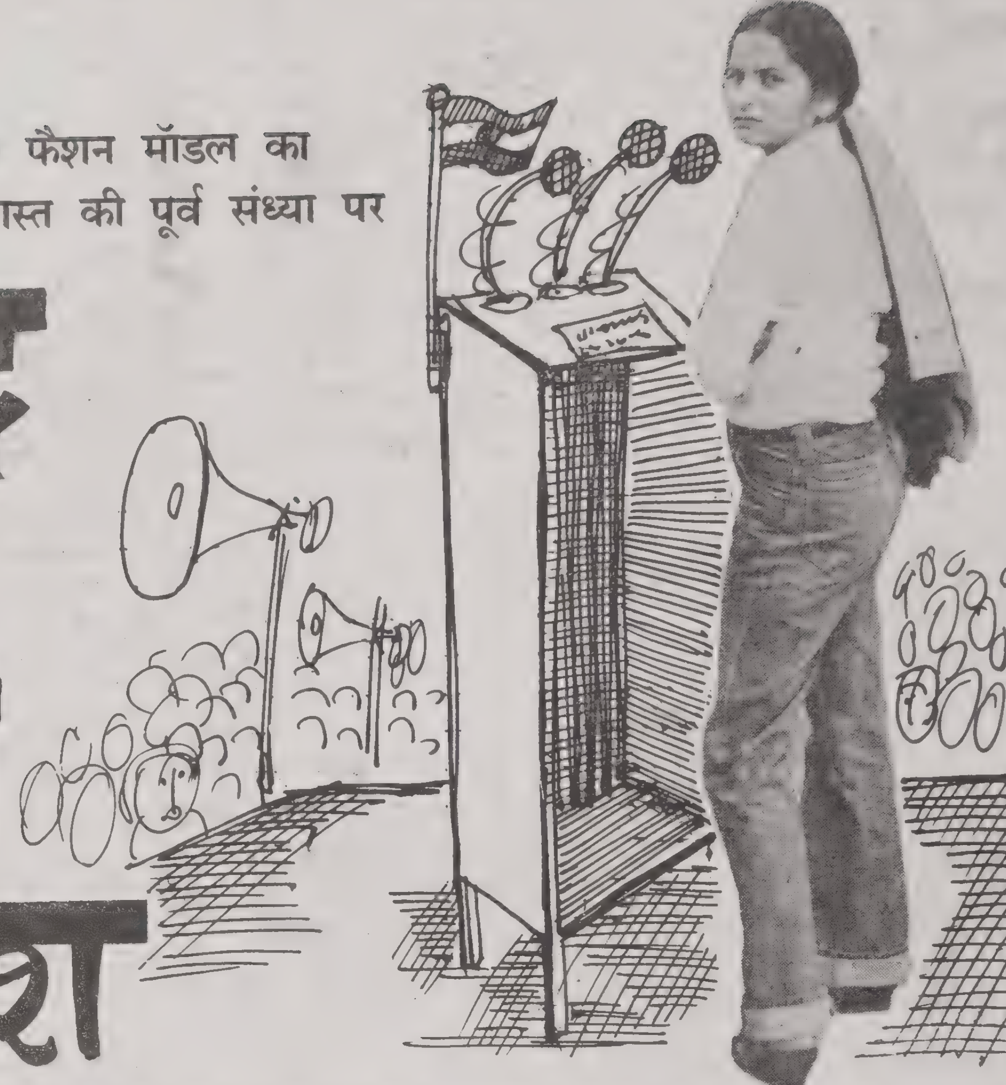





नटवर लाल
बदमाश का बच्चा फिर भाग गया खिड़की के रास्ते। अरे सुनते हो ....?
जिम कार्बेट
अजीब बात है बच्चे के पैर चीते के पंजे से लग रहे हैं।
मेजर ध्यान चंद
क्या बताऊं बहन, मुन्ने के पैर-कितनी बार नीचे करती हूं
लेकिन यह है कि फिर पैर 'डी' में ही घुसेड़े रखता है।
सैयद किरमानी
आपा, देखो हम कितने शौक
से यह फैंसी पालना लाये थे और इसने एक ही दिन में इसकेतीन डंडे पैर मार-मार कर तोड़ दिये।

एक फैशन मॉडल का
१५ अगस्त की पूर्व संध्या पर

राष्ट्र के नाम संदेश



प्यारे देशवासियों, आज से ३५ साल पहले इसी दिन आधी रात को हमारे दिवंगत नेता जो सफेद चूड़ीदार पाजामा और सफेद ही अचकन पहना करते थे जिनकी छाती पर लाल गुलाब सजा होता था और जिनके नाम पर एक वास्कट का फैशन भी चला था ने पहली बार लाल किले पर काश्मीर सिल्क का बना तिरंगा फहराया था। सब के सिरों पर गांधी टोपियां नजर आती थीं। लड़कियां उन दिनों शलवार कमीज पहना करती थीं जो टाइट नहीं होते थे सफेद दुपट्टे का रिवाज था। आजादी के इन ३५ सालों में हमने कितनी तरक्की की है। लट्ठे के पाजामे से मक्खनज़ीन, ब्लेजर, टेरीलीन, डैकलॉन, टैरीकाट होते हुये आज हम जीन्स के ज़माने में पहुंच गये हैं। थैलेनुमा पतलूनें पहनना छोड़ कर बैलबॉटम पहनने लग गये हैं। कमीज और टाई की जगह टी शर्ट पहनने लग गये हैं। अनाज के मामले में हम आत्मनिर्भर हो गये हैं और हमें डाइटिंग करनी पड़ रही है। हमने आसमान में अपने देश में बने उपग्रह छोड़े हैं जिनसे हम चाहें तो दुनिया में कहीं भी फैशन शो हो रहे हों उन्हें सीधा प्रसारित कर सकते हैं। इन सब के बावजूद हमारे सामने बड़ी भारी समस्यायें हैं। गरीबी की समस्या है। हमारे देश के गरीब अब भी इम्पोर्टेड फेडिड जीन्सखरीदने में समर्थ नहीं हैं। बेकारी की समस्या है जिसका मारा युवा वर्ग 'वान्टेड' कॉलम की खाक छानने में लगा रहता है जबकि उसकी उम्र फैशन वियर के विज्ञापनों को देखने की होती है। देश के कई भागों में तोड़ फोड़ करने वाले विद्रोही तत्व हिंसा भड़काने में लगे हैं। हमारा पड़ौसी देश विदेशों से उसी प्रकार नये नये हथियार खरीद कर जमा करने में लगा है जैसे नये नये अमीर बने व्यक्तियों की पत्नियां अपने कबर्ड वारड्रोवों में साड़ियां ब्लाउज़ और जेवर इकट्ठे करती रहती हैं। बड़ी बड़ी शक्तियां हिंद महासागर में अपने अड्डे बना रही हैं इससे शीत युद्ध हमारे दरवाजे पर आ गया है। ऐसा शीत जिसमें हम कार्डीगन या पुलओवर भी नहीं पहन सकते। लड़ाई का खतरा बढ़ गया है। शस्त्रों की होड़ वैसे ही तेज़ी पकड़ रही है जैसे जींस बनाने वाली कंपनियों में होड़ लगी है। अमीर देश हमें आर्थिक सहायता देने में कटौती कर रहे हैं पहले हमें मैक्सी देने का वायदा किया था अब केवल मिनीस्कर्ट पकड़ा रहे हैं। मिनीस्कर्ट से विकास योजनाओं की टांगों को कैसे ढका जा सकता है। इन सब कठिनाइयों के बावजूद हम कभी हिम्मत नहीं हारेंगे शो मस्ट गो ऑन। कई विरोधी दल हैं जो हमेशा धोती और कुर्ते की ही बात करते हैं। पोलिएस्टर टी शर्ट और टाइट जीन्स के विरुद्ध प्रचार करते हैं। मैं पूछती हूं कि अगर हम अपनी सेना को धोतियां पहना दें तो क्या वह लड़ाई के मैदान में आगे बढ़ पायेंगे ? आप ऐसे गलत प्रोपेगन्डा से बचें और इस शुभ अवसर पर सब मिल कर संकल्प करें कि हम मिल कर मेहनत से अपने देश को उन देशों की श्रेणी में ला कर खड़ा करें जहां की महिलायें बिकिनी पहनती हैं।

आइये तीन बार जोर से मेरे साथ नारा लगाइये

जीन्स हिंन्द! जींन्स हिंद!! जीन्स हिंन्द!!!


राजा जी
शाही जनगणना अधिकारी
तुम हमेशा मुझे पपीता या गोलगप्पे खाते नज़र आते हो बस। कभी तुमको मैंने काम करते नहीं देखा। कैसे चलता है काम तुम्हारा?
हा हा। क्या ज़रूरत है काम करने की? जब राजा इतना मूर्ख मिला हो तो काम करना बेवकूफी है। बातें बनाना आना चाहिये बस।
अच्छा
लेकिन अब तुम्हारा आराम हराम होने वाला है। मैं जो शाही फरमान लेकर आया हूं उसे पढ़ कर तुम्हारे होश उड़ जायेंगे, मुफ्त की खाते-खाते जो चर्बी चढ़ गयी है वह पिघलने लगेगी, लो पढ़ो।
फौरन सात दिन के अन्दर राज्य में जनगणना करके इत्तला दी जाये कि हमारे राज में कितनी कुंआरी लड़कियां हैं.
अब की बार बातें बनाने भर से काम नहीं चलेगा। हरामखोर को छः दिन राज्य में वह दौड़ धूप लगानी पड़ेगी कि नानी याद आ जायेगी। कई जोड़े जूतों के घिस जायेंगे।
अरे, यह पट्ठा तो अपने आफिस में सो रहा है? दौड़धूप करना तो दूर रहा.
अपनी टेबल पर बिस्तरा ही बिछा कर सो रहा है। कल राजा को क्या रिपोर्ट देगा?
अब के लगता है इसकी मौत आई है। जब राजा को रिपोर्ट नहीं मिलेगी तो वह इसे तोप के मुंह से बाध कर उड़वा देगा। मैं भी देखूंगा क्या बहाना बनायेगा राजा के सामने।
राजा के कान में कुछ कह रहा है! क्या कह रहा होगा?
देखा, मैंने छः दिन दफ्तर में खूब नींद के मज़े लिये/ और जो रिपोर्ट दी उस पर खुश होके राजा ने अपना हार इनाम में दे दिया।
तुम तो सारा समय सोते रहे। भला कैसी रिपोर्ट दे दी? समझ नहीं आया।
मैंने कहा था न कि राजा बेवकूफ हो तो काम करने की ज़रूरत नहीं। मैंने राजा को कहा कि राज्य में एक भी कुआंरी लड़की नहीं है क्योंकि सब दिल ही दिल में उसे अपना पति मान चुकी हैं। बस।

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

जोग राज सचदेवा, टोहाना : मैं अच्छे दोस्तों से दोस्ती करना चाहता हूं. बताइये क्या करूं ?

उ. : दीवाना फ्रैंड्स क्लब का सदस्य बनने के लिये अपना फोटो हमारे पास भेज दीजिये.

संजय कुमार गोरवानी, कटनी : बुरे आदमी की पहचान कब होती है ?

उ० : जब वह आदमी हमारा हाथ अपनी जेब में जाने से रोक देता है.

अजिन्दरसिंह चुघ, शहादरा, दिल्ली : औरत अपनी उम्र छुपाती है और मर्द अपनी आमदनी, ऐसा क्यों ?

उ. : दोनों को छापा पड़ने का डर होता है.

रवि भाटिया, शंकर रोड मार्किट : चाचा जी, कोई ऐसी दवा बताइये जिसे खाने से कभी मौत न आये.

उ. : क्या बात है भाटिया जी, आप के दिमाग़ की गाड़ी क्या बिलकुल ही पटरी से उतर गई है. हमारे पास तो ऐसी कोई दवा नहीं पर सुना है प्राचीन काल में रूस के एक वैज्ञानिक ने ऐसी दावा बनाई थी और खुद पी ली थी. वहां की लोक कथाओं में इसका ज़िक्र आता है. कहते हैं दवा पीने के बाद समय गुजरता गया. वह वैज्ञानिक बूढ़ा होता गया. सौ साल बीत जाने के बाद वह चलने फिरने से लाचार हो गया. वह बीमार रहने लगा. और समय बीतने पर हड्डियों से उसका मांस लटकने लगा. हाथ पांव कांपने लगे. एक सौ बीस वर्ष बीतने पर उसकी आंखों की ज्योति जाती रही. एक सौ पचास वर्ष का होने पर उसे टाईफ़ाईड हो गया. इसके बाद बीस साल तक टाईफ़ाईड में उसका बदन भट्टी की तरह जलता रहा. उस के परिवार वालों ने उसका बहुत इलाज कराया. जब वह दो सौ बीस वर्ष का हुआ तब भी हालत यह थी कि न तो टाईफ़ाईड का बुखार उतरने का नाम लेता था, और न उसे मौत आती थी, और वह हड्डियों का पिंजर बराबर सांस लिये जा रहा था. आखिर तंग आकर उसके घर वालों ने उसे जिंदा ही क़ब्र में दफ़ना दिया. जहां शायद वह कभी न मरने वाली दवा खाने वाला अब भी जिंदा होगा और सांस ले रहा होगा.

राकेश अग्रवाल, सफीदों, (हरियाणा) : लोग कहते है स्वर्ग में जाने के बाद हर चीज़ आसानी से मिल जाती है. क्या आप का रोचक कालम ''आपस की बातें'' भी स्वर्ग में आसानी से मिल जायेगा ?

उ. : हमने तो सुना है अच्छे कर्म करने वालों का स्वर्ग यहीं है. इस हिसाब से आप का घर स्वर्ग है और वहां ''आपस की बातें'' के साथ दीवाना आप के यहां आता ही है।



आर. एस. बेदी, सितारगंज : चाचा-जी, मैं एक घर के पास से गुजरता हूं तो अन्दर से आवाज़ आती है. ''दिल तड़प तड़प के कह रहा है आ भी जा.'' बताइये मैं क्या करूं ?

उ. : आप उस घर की खिड़की के नीचे बैठ कर रो रो के ऊंची आवाज़ में सुर लगाईये, ''सर पकड़ पकड़ के रो रहा हूं ना बुला, तू हम को और ना सता, तू मान जा.''

मनोज कुमार गर्ग, हिण्डौन सिटी : कोई प्यार में धोखा दे जाये तो क्या करना चाहिए ?

उ. : इस बात पर एक शानदार दावत देनी चाहिए कि प्यार सफल नहीं हुआ और और तीस साल बाद आप के सर की हालत हमारे सर जैसी नहीं होगी.

बलराम कटारिया, कोटा : चाचा जी, अ... कौन सा खेल खेलना पसन्द करते हैं ?

उ. : हर वह खेल, जिस में हो रुपये व... रेलपेल.

ओम प्रकाश ग्वाला, ब्यावर छावनी : चाचा जी इंसान को कब हार नहीं मान... चाहिये ?

उ. : मतलब है कब ज़िद पर अड़े रह... चाहिये ? तो ओम प्रकाश जी, तब, ज... अस्पताल और कबरिस्तान दोनों पास हों...

ओम प्रकाश भाटिया, ''टीटू'', पहाड़... धीरज : प्रेमिका की नज़र प्रेमी के दिल प... होती है, या उसकी जेब पर ?

उ. : उसके सर पर. विवाह से पहले य... देखने के लिये कि उसके अंदर क्या है. औ... विवाह के बाद यह देखने के लिये कि उस के ऊपर क्या बचा है.

आपस की बातें
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


फैण्टम- गुमनाम कमाण्डर
खींचो . . .
भारी है !
FALK & BARRY 9-15
यह जीवित है !
ओह ! धन्यवाद !
वह जीवित है !
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
तुम्हें कैसा लग रहा है ?
लगता है मेरी टक्कर किसी ट्रक या राइनो से लग गई हो . . .
FALK & BARRY 9-16
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
धन्यवाद, अभी-भी मैं थोड़ा सा विचलित हूँ
उसने शेर को मेरे दादा के भाले से मारा है ।
फैन्टम ! फैन्टम !
राक्षस को न केवल भाले सहायता से मौत घाट उतारना, ही बहादुरी काम है ।
हम सब लोग खुशी मनायेंगे ।
शेर मर गया !
हाँ मुझे इसका दुख है !
FALK & BARRY 9-17
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
दुख ?
उसे मरना पड़ा क्योंकि वह आदमियों और पशुओं का हत्यारा बन गया था ।
परन्तु वे उसके प्राकृतिक शिकार नहीं थे वह आदम खोर इसके कारण बना था ।
दुखदायी जख्म के कारण वह धीमा पड़ गया था और अपने साधारण शिकार पकड़ने में असमर्थ हो गया था ।
इसलिये वह आसान शिकार पर उतारु हो गया, मनुष्य चौपाये !
परन्तु ऐसे राक्षस के यह जख्म किस जानवर के कारण हुआ होगा ?
मनुष्य !
?!?
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
FALK & BARRY 9-18


एक मनुष्य ने शेर को जख्मी कर दिया ?
यह भाले या तीर का जख्म तो दिखाई नहीं देता, फिर किस हथियार का है ?
जंगल का हथियार नहीं है, एक गोली !
एक तेज मार करने वाली राईफल से सुरक्षित दूरी से छोड़ी गई गोली !
फिर ···· डर के मारे बैंग !
'होन' बेवकूफ ! अभी नहीं
बैंग
?!?
बड़ी तराईयों के— जानवरों के झुंड—
!
शिकार चोर !
नहीं होन!
!!
!!
मूर्ख! तुमने उन्हें डरा दिया।
मैं शूट नहीं करना चाहता था।
वह आवाज—दूर कहीं बिजली कड़की ?
यहां तो बन्दूक नहीं चलती, मुखियाओं की कौसिंल ने बन्दूक चलाने की मनाई की हुई है।
बोलने वाले ढोल बजाओ, वाम्बासी को बता दो बड़े मैदानों में शिकार चोर आये हैं।
मैं इन शिकार चोरों को रोकने घोड़े से आगे जाता हूं।
चलते फिरते भूत हम ऐसा ही करेंगे।
शिकार चोर क्या है ?
शिकारी जिनके पास आग उगलने वाली लकड़ी है।

खेल खेल में

भारत इंगलैंड सीरीज १९८२

तीन टैस्ट मैचों की शृंखला के अंत में खिलाड़ियों का औसत

बैटिंग

	टैस्ट	पारियां	उच्चतम	कुल रन	औसत
संदीप पाटिल	२	२	१२९*	१९१	१९१.००
कपिल देव	२	४	९७	२९२	७३.००
विश्वनाथ	३	५	७५	१८९	४७.२५
वेंगसरकर	३	५	१५७	१९३	३८.६०
सैय्यद किरमानी	३	४	५८	११०	३६.६६
सुनील गावस्कर	३	३	४८	७४	२४.६६
यशपाल शर्मा	३	५	३८	९८	२४.५०
रवि शास्त्री	३	५	६६	९३	१८.६०
मदन लाल	३	४	२६	५२	१३.००
सुरुनायक	२	३	११	१९	९.५०
दिलीप दोषी	३	३	५*	९	९.००
गुलाम पारकर	१	२	६	७	३.५०
अशोक मलहोत्रा	१	२	५	५	३.५०

बालिंग

	ओवर	मेडन	रन	विकेट	औसत
दिलीप दोषी	१५२.१	३८	४५५	१३	३५.००
कपिल देव	१३३	२१	४३९	१०	४३.९०
संदीप पाटिल	१४	१	४८	१	४८.००
मदन लाल	१०२.१	३०	२९१	६	४८.५०
रविशास्त्री	११६.३	२९	२७५	४	६८.७५
सुरुनायक	३८.३	६	१३२	१	१३२.००
यशपाल शर्मा	३	२	१	०	—

बैटिंग इंगलैंड

	टैस्ट	पारियां	उच्चतम स्कोर	कुल रन	औसत
ईयन बॉथम	३	३	२०८	४०३	१३४.३३
ज्याफ मिलर	१	१	९८	९८	९८.००
रैन्डल	३	३	१२६	२२१	७३.६६
एलेन लैम्ब	३	५	१०७	२०७	५१.७५
क्रिस टावरे	३	५	७५*	१७८	४४.५०
जोहन एलट	२	२	४१*	४४	४४.००
डेविड, गॉवर	३	५	४७	१५२	३८.००
फिल एडमंडस	३	३	६४	९०	३०.००
ज्याफ कुक	३	५	६६	१३८	२७.६०
बॉब विलिस	३	३	२८	३५	१७.५०
आर प्रिगंल	३	३	२३	३९	१३.००
रोजर टेलर	३	४	३१	३६	१२.००

शेष पृष्ठ ४६ पर

हंसना मना है

एक आदमी एक छोटे कार ठीक करने के गैरिज पर रुका, ''जब भी मैं सत्तर की गति पर पहुंचता हूं, ईंजन में ठकठक की सी आवाज़ आती है,'' वह मिस्त्री से बोला, ईंजन की काफ़ी लम्बी जांच के बाद मिस्त्री बोला ''जनाब मुझे तो ईंजन में कोई खराबी दिखाई नहीं देती, हो सकता है वह स्वर ईश्वर की आपको चेतावनी हो!

●

जैक पार ने बताया कि एक बार जब वह लन्दन पहुंचा तो, उसके एक ब्रिटिश मित्र ने उससे कहा कि होटल में पहुंचने पर तुम, होटल के टेलीफोन आपरेटर से कहना, बकिंघम पैलेस फोन कर संदेश छोड़ दे कि महारानी उससे बात कर लें। ''बेशक 'वे' बात नहीं करेंगी'' मित्र ने कहा ''परन्तु बात होटल में फैलने पर तुम्हारी खूब बढ़िया देखभाल होगी''।

●

ट्रेन अचानक रुक गई, एक स्त्री यात्री ने फर्श से उठ कर कंडकटर से पूछा कि क्या हुआ है? ''हमारी टक्कर एक गाय से हो गई है'' उसने महिला को बताया।
''क्या वह रेल की पटरी पर थी''?
''नहीं'' कंडक्टर ने रुखेपन से उत्तर दिया' हमने उसका खेतों में जाकर पीछा किया था''।

●

एक कामयाब व्यापारी से भेंटकर्त्ता:
भेंटकर्ता: ''आप अपनी सफलता का श्रेय किस बात को देते हैं?''
व्यापारी: ''दो शब्द—ठीक निर्णय''।
भेंटकर्ता: ''आप ठीक निर्णय कैसे करते हैं''?
व्यापारी: ''एक शब्द — तजुर्बा''
भेटकर्ता: ''आप ने तजुर्बा कैसे हासिल किया?''
व्यापारी: ''दो शब्द—गलत निर्णय''।

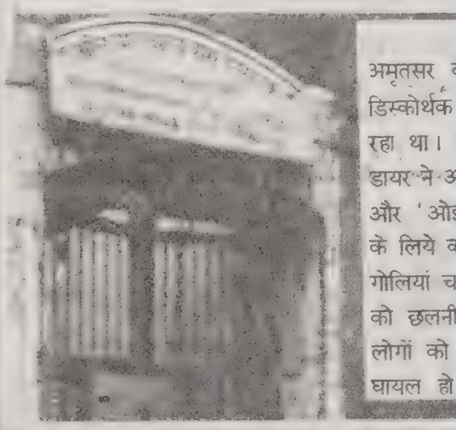
●

रूस में सुनी बात ''बोलने की हमें भी उतनी ही स्वतंत्रता है जितनी अमरीका में अमरीकनों को, वे लोग व्हाईट हाउस के सामने खड़े हो प्रजीडेन्ट के बारे में अपने विचार चिल्ला चिल्ला कर व्यक्त कर सकते हैं। हम भी यहां रूस में क्रेमलिन में खड़े हो कर अमरीकन प्रजीडेन्ट के बारे में स्वतंत्र रूप से जो चाहें कह सकते हैं। ●

स्वतंत्रता संग्राम

डिस्को स्टायल

जब भारत अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहा था तो उस समय डिस्को संगीत का प्रचलन नहीं हुआ था। यदि उस समय स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ डिस्को की आंधी चल रही होती तो हमारे स्वतंत्रता संग्राम के रूप पर क्या असर हुआ होता। डिस्को के रंग में रंगी वर्तमान पीढ़ी उस समय की घटनाओं और स्थितियों को ठीक तरह समझ नहीं पा रही है। युवाओं को उन ऐतिहासिक घटनाओं को मर्म रूप में समझाने के लिये आवश्यकता उस समय की घटनाओं को डिस्को स्टायल में लिखने की है। यदि निम्न प्रकार से नौजवानों को स्वतंत्रता संग्राम से परिचित कराया जाये तो वे ठीक तरह समझ सकेंगे।



जलियां वाला बाग

अमृतसर के जलियां वाला बाग स्थित बैसाखी डिस्कोथेक में 'रम्भा हो हो हो' का रिकार्ड बज रहा था। लोग नाच रहे थे कि अचानक जनरल डायर ने आकर रिकार्ड बन्द करने का आदेश दिया और 'ओइम जय जगदीश हरे'' का भजन बजाने के लिये कहा। लोगों ने प्रतिरोध किया। डायर ने गोलियां चला कर स्टीरियो फोनिक साऊंड सिस्टम को छलनी कर दिया। कुछ गोलियां छितरा कर लोगों को भी लगीं। तीन सौ मरे और चारे सौ घायल हो गये।



लोकमान्य तिलक

लोकमान्य तिलक जी ने घोषणा की थी—
''आजादी हमारा जन्म सिद्ध
गुडुम्बा फुलवा फुलवा फुलवा
गुडुम्बा फुलवा है''



सरदार भगत सिंह
बी. के. दत्त

'दिल्ली ऐसेम्बली में साइमन कमीशन द्वारा प्रस्तावित काले बिल को पास करने के लिये बैठक हो रही थी कि दर्शक गैलरी से भगतसिंह और बी. के. दत्त ने खड़े होकर पर्चे फैंके और बम भी साथ ही नारा लगाया, ''आप जैसा कोई . . . पूं ---पूं- . . . . .''!



डांडी मार्च
(नमक आन्दोलन)

फिरंगी सरकार ने डिस्कोथेकों और सिनेमा हॉलों में नमक वाले पापड़, पकौड़े और तली मूंगफली खाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था गांधीजी ने इसके विरोध में डांडी सिनेमा हाल पर जहां फिल्म नमकीन लगी थी अपने सहयोगियों के साथ मार्च किया और हाल में घुस कर पापड़ और पकौड़े खाकर कानून को तोड़ा।



लाला लाजपत राय

एक विशाल जन सभा के सामने बोलते हुये लाला जी ने कहा, ''मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक चोट अंग्रेज पॉप ग्रुप बीटल्स के गिटारों की टंकार साबित होगी।''



सुभाष चन्द्र बोस

नेताजी ने गर्जना की थी, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आइयो आम्मा ऽऽ नाकोया ऽऽऽ टूं टूं- बैंग बैंग आज़ादी दूंगा।"



असहयोग आन्दोलन

इस आन्दोलन के अंतर्गत देश के नेताओं ने जनता से अंग्रेज सरकार से असहयोग करने का आह्वान किया यानि अंग्रेज सरकार डिस्को म्यूजिक लगायें तो जनता भंगड़ा करेगी, अंग्रेज रम्भा-सम्भा म्यूजिक बजायें तो भारतीय गुजराती डाडिया नृत्य करेंगे, अगर वह रेगे बूगी रॉक और फाक्सट्राट लगायें तो लोग भारतनाट्यम करके असहोग करें।



"भारत छोड़ो आन्दोलन"

१९४२ में गांधी जी ने "अंग्रेजो भारत छोड़ो गिरीदारा, गिरीदारा, गिरीदारा" नामक डिस्को एलबम रिलीज किया। डिस्क बहुत लोकप्रिय हुआ। मूल एलबम में पूंऽऽपूंऽऽऽऽ की आवाजें नहीं थी लेकिन जब शादी के बैंड वालों ने अपनी तरफ से पूंऽऽऽऽ टूंऽऽऽऽऽ की आवाजें जोड़नी शुरू कीं तो गांधी जी ने एलबम वापिस ले लिया।



क्रांतिकारी

युवा क्रांतिकारी हमेशा यह गुनगुनाया करते थे, "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना कितना जोर पो प्पो पो पो . . . कुकडू कुकूं . . . झिंका झिंका . . . गिली गिली छू छू- . में है"



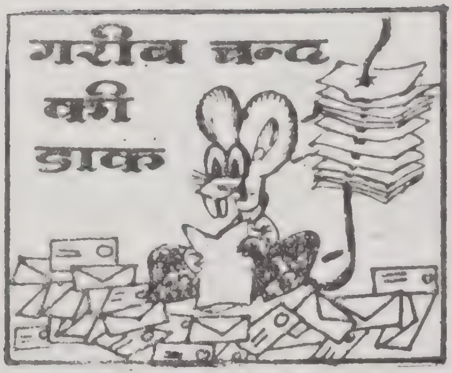
आजाद हिन्द फज्ज

९४० में नेता जी भारत के स्लो डिस्को स्टायल, र बोर होकर भाग निकले। वे फास्ट डिस्को चाहते थे। वहां से जर्मनी होते हुये वह जापान पहुंचे और न्यो व तोशीबा की मदद से उन्होंने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज नामक डिस्कोर्थक खोला। वहां के डिस्को डांसरों ने अंग्रेज डिस्को डांसरों का मलाया फोरेस्ट हिल्ज़ डिस्को कम्पीटीशन में डट कर मुकाबला किया।



१५-अगस्त १९४७

१५ अगस्त १९४७ को हिन्दुस्तान डिस्को का पूरा मैनेजमैंट अंग्रेजों ने भारत को सौंप दिया। ठीक आधी रात को लाल किले की प्राचीर पर नये मैनेजर जवाहरलाल नेहरू जी ने झंडा फहराया। बैंड ने हमसे बढ़ कर कौन है की धुन बजायी और लाखों लोग नाचने लग गये।



सुरेशा खुराना 'पप्पी' जींदः गरीबदास जी, जब आप हमारे पिजरें में आ गए तो प्रश्नों के उत्तर कौन देगा?

उ० : भाई मेरे हम सब पहले से ही पिजरों में हैं। यह शरीर पिजरा है इसमें प्राण पखेरू रहते हैं। दफ्तर पिंजरा है जहां आठ घंटे बीतते हैं। घर एक पिंजरा है जहां आजादी कैद रहती है। समाज पिंजरा है जिसमें हम रहते हैं। एक और पिंजरे में फंस गये तो क्या फर्क पड़ता है।

नवीन कुमार, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-१५ : स्त्रियों की दाढ़ी क्यों नहीं होती?

उ० : दाढ़ी होती भी तो कौन सा आप उसे उखाड़ लेते?

प्र० : भगवान हैं? हैं तो कहां हैं कृपया आप मुझे इसके बारे में बताइए?

उ० : भगवान तो एक रद्दी की टोकरी है जिसमें इन्सान अपनी सारी असफलताओं और गलतियों की जिम्मेवारी फैंकता जाता है।

सुनील कुमार वगडीया, हावड़ा : डियर गरीब चन्द जी, आप अब कागज कुतरते हैं तो कितना खाते हैं। कितना छोड़ते हैं बताइये?

उ० : मैं कायदे कानून का पक्का हूं। हाशिया छोड़ कर खाता हूं।

मदन खत्री बानेश्वर, काठमांडौः मैं किसी से प्यार करता हूं क्या आपको कोई आपत्ति है?

उ० : आपत्ति एक ही सूरत में हो सकती है कि प्रेमिका के ख्यालों में खोकर आप मेरी डाक में लिफाफे पर टिकट चिपकाना भूल जायें।

मंजू तिवारी, मिलौनीगंज, जबलपुरः क्या शादी सपनों को जकड़ने वाली जंजीर है?

उ० : ऐसी तो कोई बात नहीं। राशन की लाइन में खड़े-खड़े सपने देखने का मौका काफी मिलता रहेगा।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर (उ.प्र.): मनुष्य को कुदरत ने सब कुछ दिया फिर भी इन्सान रोता क्यों रहता है?

उ० : आंख व आंसू भी तो कुदरत ने ही दिये हैं। अगर रोये न तो इनका इस्तेमाल कैसे होगा?

सुधा उपाध्याय, मिलौनी गंज, जबलपुर (म.प्र.): गरीब चंद जी, शादी सपनों की रानी है या बरबादी की कहानी?

उ० : शुरू में सपनों की रानी और एंड में बरबादी की कहानी। बीच के पृष्ठ बच्चे फाड़ कर खराब कर देते हैं।

मो. साजिद सिद्दीकी, जगदलपुर गरीब चंद जी, आप हर समय मुस्कराते नजर क्यों आते हैं?

उ० : मुस्कुराना आसान हैं। मुस्कराने में शरीर की केवल आठ मांसपेशियां हरकत करती हैं और तेवर चढ़ाने में २३ मांस पेशियों को मजदूरी पर लगाना पड़ता है।

सुरेन्द्र खुराना 'काका', पानीपतः गरीब चंद जी, क्या शादी के बाद वाकई आदमी का जीवन सुधर जाता है?"

उ० : आदमी सुधर जाता है उसका जीवन ही कहां होता है?

विनोद पुरी 'रंजू' लुधियानाः गरीब चंद जी, अच्छे चरित्रवान की पहचान क्या है?

उ० : वह देखने में भौंदू सा लगेगा। बस यही पहचान है।

सुरेन्द्र खुराना 'पप्पू' खुराना, मोंगाः गरीब चंद जी, आपने अपनी जिन्दगी में कोई भयानक गलती की है?

उ० : एक बार मैंने भयानक के हिज्जे (बयानक) गलत लिखा था।

सुरेन्द्र खुराना 'काका' पानीपतः औरतें अपना उल्लू सीधा करने में बड़ी माहिर क्यों होती हैं?

उ० : क्योंकि उल्लू खुद उनके चारों तरफ मंडराते रहते हैं एप्लीकेशन लेकर कि हमें सीधा करो।

माला रानी "अप्पू" साहिब गंज स.

प्र.: गरीब चन्द जी, अगर आप के सामने शेर की खाला (मौसी) को छोड़ दें तो आप क्या करेंगे?

उ० : मैं सांस की नली में पार्टीशन खड़ा करूंगा ताकि ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह जाये।

अनिल मदान 'पम्पी' पानीपत (हरि) : गरीब चन्द जी, आपने अपनी जिन्दगी में अभी तक क्या कुछ खोया है और क्या पाया है?

उ० : दूध का खोया है और कुर्सी का पाया है।

अशोक कुमार डिहरी (रोहतास) : भी दुःख की लड़कियां रो कर मन्न क हैं और लड़के?

उ० : दाढ़ी बढ़ा कर और कमीज के खुले रख कर।

उमेश ज्ञानचंदानी 'उम्मी', बिल (म. प्र.) : डीयर, हमारे पड़ोस में रहने पहलवान को आपसे मिलने की तीव्र है। आप कब पधार रहे हैं?

उ० : मैं पहलवानों से दूर ही रहत उनसे सरसों के तेल की बदबू आती बातों से चर्बी की।

बाल किशन पारीक, बीकानेर : चन्द जी आपके कान हर समय खड़े रहते हैं?

उ० : बैठने के लिये सिर पर कुर्सी जुगाड़ नहीं है।

अशोक देव ताम्रकार, तमेर पारा (म.प्र.) : गरीब चन्द जी, चिल्ली आपके रिश्ते में क्या लगते हैं?

उ० : हमारा तो दूर का रिश्ता दो दांत रोटी का है। हां, तुकबंदी की ओर से का बिल्ली से नज़दीकी रिश्ता है।

प्रेम बाबू शर्मा 'सुमन' बगीची जी : गरीब चन्द जी, मां के पैर के स्वर्ग है, तो पिता के पैर के नीचे?

उ० : जूतों का तलवा जो घिसघिस क के पैर के नीचे के स्वर्ग के रख रखा खर्चा चलाता है, फाइनैंस करता है।

एस. के थापा, राय वाला से : चन्द जी, अगर आपके जाल में खूबसूरत लड़की फंस जाय तो आप करोगे?

उ० : उस ऋषि की तलाश करूंगा जो श्राप देकर चूहिया बना दे।

सुरेश खुराना 'पप्पी' जीन्द : गरीब चन प्रेमिका किस हद तक साथ देती है?

उ० : जिस हद तक आपका बटुवा साथ दे सामर्थ्य रखता हो।

राजेन्द्र पाल नैनीताल : आप राजनीति में जाइये खूब चमकेंगे किसी नेता की चमच करके।

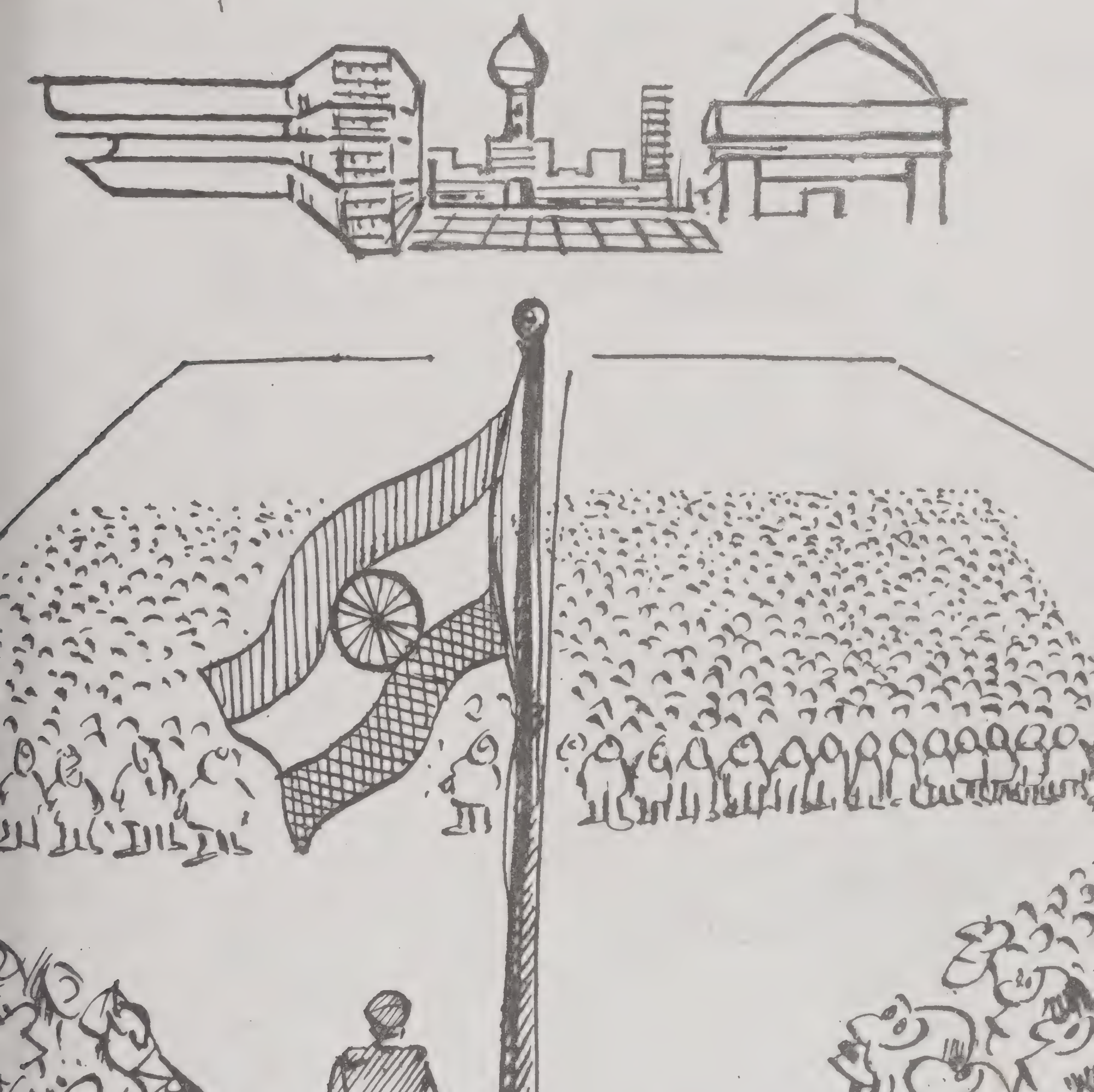
उ० : चमचागीरी से चमकने का मुझे तो लाभ नज़र नहीं आता। मैंने देखे है कि बिजली जाती है तो चमचों के घर भी अंधे रहता है।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


लल्लू
यह बरसात का मौसम भी कितना रोमांटिक होता है। दिल में नये नये सपने जगाता है। इसीलिये हर फिल्म में बरसात के बैकग्राउंड को लेकर एक आध रोमांटिक सीन या गाना होता है। मेरा दिल भी बरबस ऐसे में गाने को कर रहा है . . . .
ऐसी बरसात में मीना, नीना, लीना, जीना, शीना, प्रीना या कोई चीना घूमने ले जाने के लिये कहती। हमारे पास छाता न होता और हम दोनों बरसात में भीगते . . .
अरे ऐसी क्या बात है? शायद कोई मुझसे यह पूछ ही ले। क्यों न प्रेमिका की कल्पना की जाये और बरसात में भीगा जाये। रिहर्सल ही सही
ओऽऽऽऽऽऽ सजना ऽऽऽऽऽऽ बरखाबहार आई -- रस की फुहार लाई . . . .
यह डमडम डिगा डिगा मौसम भिगा भिगा मैं तो गिरा मैं तो गिरा हाय अल्ला।
बरखा राऽऽऽऽऽनी टेंओंऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ ज़रा जम के बरसो . . . . मेरा दिलवर जा न पाये ऽऽऽऽऽ पींऽऽऽऽऽऽऽ
जादूगर सैंया छोड़ो मेरी बैंया, हो गई आधी रात, अब घर जाने दो . . . .
चल लल्लू अब घर अपने। काफी भीग लिये और काफी रिहर्सल हो गयी, अब प्रीमियर शो का इन्तजार कर
रमेश, नीटू, कमल और राजेश किसी का फोन नहीं आया। बारिश से डर गये सब यही तो मौसम बाहर घूमने जाने का है। लल्लू को ट्राई करती हूं। वह तो फ्री होगा ही।
ओह . . .कौन मीना? क्या . . . .घूमने का प्रोग्राम . . .बात यह है . .मैं तो बीमार हूं . . . .बारिश में भीग गया था . . .निमोनियां हो गया . . .मैं उठ कर खिड़की तक . .भी नहीं जा सकता . . .ओह . . . . .सारा जिस्म टूट रहा है . . . . .अच्छा फिर कभी जिन्दा रहे तो आ

दीवाना कार्ड मोड़कर देखिये

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये



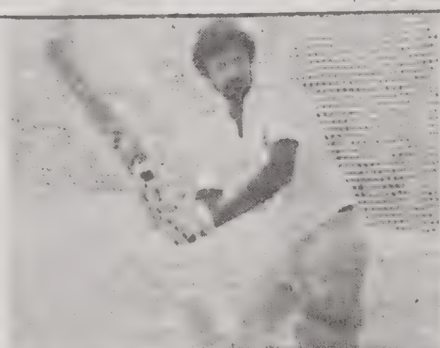
१५ अगस्त को हर कस्बे,हर शहर में लोग इकट्ठे हो कर झंडे को सलामी देते हैं। लेकिन हाल के वर्षों में राष्ट्रीय झंडे के प्रति वह आदर भावना नहीं रही जो पहले थी। हम आज वास्तव में जिसे दिल से सलामी देते हैं वह है - . . . . .

पृष्ठ मोड़ कर देखें

क्रिकेट दीवाने



क्रिकेट के पीछे जितनी दीवानी भारतीय जनता है उतना और कोई नहीं है। क्रिकेट के जन्मदाता देश स्वयं इंगलैंड में क्रिकेट अंतिम सांस ले रहा है। लेकिन भारत है कि क्रिकेट की लोकप्रियता में कोई फर्क नहीं पड़ा। खेल इतना बेतुका कि पांच छः दिन चले और हारजीत के परिणाम तक की आशा नहीं होती। फिर वह कौन सी मानसिकता है जो हमें इस सामन्तवादी खेल से वैसे ही चिपके रहने को बाधित करती है जैसे बन्दरिया मरे बच्चे को छाती से चिपकाये रहती है। कहीं कुछ तो कारण होगा। जी हां, है कारण! वास्तव में भारतीय जीवन का वास्तविक दर्पण क्रिकेट के मैदान में ही नज़र आयेगा। इस खेल और हमारे जीवन की गति व घटनाओं में आश्चर्यजनक दीवानी सामानतायें हैं। जरा आइये इन समानताओं पर एक नज़र डाल कर देखें



हमारी टीम में आपने खासियत देखी होगी कि पहली पारी में रन नहीं बनाते, दूसरी पारी में लम्बा चौड़ा स्कोर खड़ा करते हैं। इसीलिये भारतीय टीम दूसरी पारी के टीम के नाम से जानी जाती है।

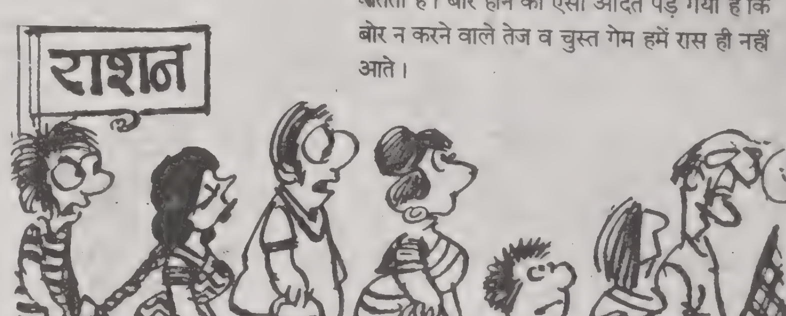
उधर भारतीयों की वास्तविक जिन्दगी देखें। प्रेम होता है तो आंख मटक्का तक ही सीमित रहता है। समाज इससे आगे बढ़ने नहीं देता। गोया प्रेम क्रिकेट पर टिपटिप बैटिंग व मेडन ओवर खेले जा रहे हों, जो कुछ रन बनने होते हैं वह दूसरी पारी में यानि शादी के बाद बनते हैं।

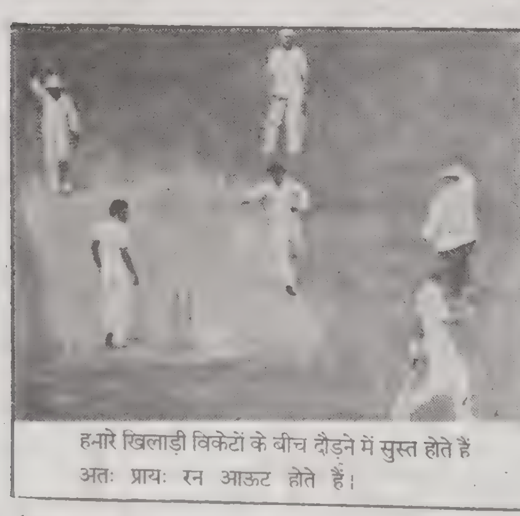




दशक पांच दिन तक दिन भर बैठ खेल देखते रहते हैं जम्हाइयां लेते रहते हैं। करवटें बदलते रहते हैं बोर होते रहते हैं लेकिन क्रिकेट जरूर देखना है।

हमारी वास्तविक जिन्दगी ही बोरियत से भरी है। जिन्दगी का तीन चौथाई भाग राशन, बस, रेल या लायसैंस परमिट के लिये क्यू में खड़े-खड़े बोर होते बीतता है। बोर होने की ऐसी आदत पड़ गयी है कि बोर न करने वाले तेज व चुस्त गेम हमें रास ही नहीं आते।





हमारे खिलाड़ी विकेटों के बीच दौड़ने में सुस्त होते हैं अतः प्रायः रन आऊट होते हैं।

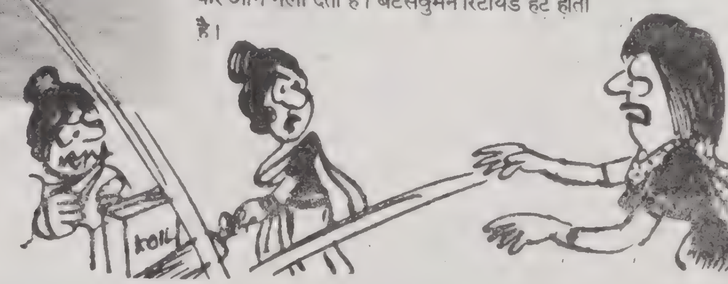
हम जीवन में भी रन आऊटों से भरे होते हैं। रोमांस हुआ। कुछ कर पायें इससे पहले ही रन आऊट हो गये। या अपनी शादी कहीं और हुई या उसकी। तीसरा हफ्ता महीने का आया और राशन भी रन आऊट व जेब भी रन आऊट। सैकंड-थर्ड डिवीजन आया और कॉलिज म प्रवश पाने से रन आऊट। हाय रे रन आऊट।

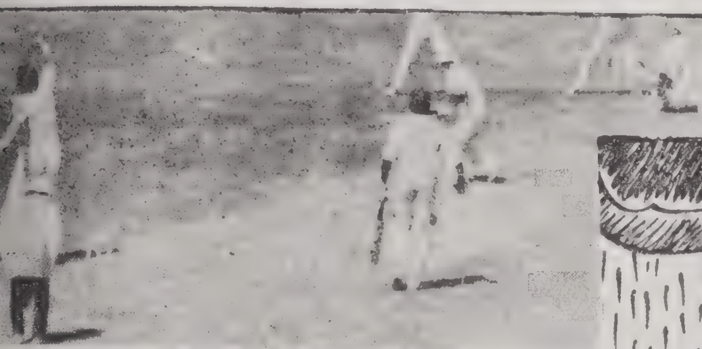




हमारे बैट्स मैनों को प्रायः दूसरे देशों के फास्ट बालरों का समाना करना पड़ता है।फास्ट बालरों को खेलने की आदत न होने के कारण सर फड़वाते हैं। कलाबाजियां खाते हैं। अपनी ही विकेट पर गिर पड़ते हैं।

हमारी घरेलू जिन्दगी में बम्परों की भर मार है। नयी बहु आयी और सास व ननद ने तानों के बम्पर फैंकने शुरू कर दिये। कभी सास बॉलिंग करती है कभी ननद। विकेटों की जगह मिट्टीके तेल का पीपा रखा होता है। सास व ननद में से जो विकेट कीपिंग कर रही होती है मौका पाकर पीपा बैट्समैन पर उंडेल कर आग गला देती है। बैटसवुमन रिटायर्ड हर्ट होती है।

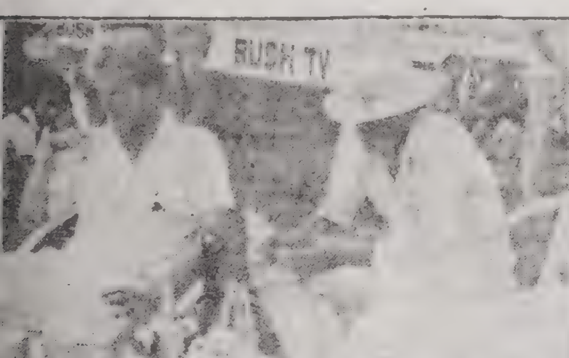




हमारी टीम हारने वाली होती है तो सारा दारोमदार वर्षा पर होता है। वर्षा आई तो टीम हारने से बच जाती है। हम सुख की सांस लेते हैं—इंद्र देव को बधाई देते हैं।

वास्तविक जीवन में हमारा देश पूरी तरह मानसून पर आश्रित है। वर्षा हुई तो फसलें होंगी नहीं तो जय राम जी की।





क्रिकेट अजीब गेम है। बैटिंग करने वाली टीम के कुल दो खिलाड़ी मैदान में होते हैं और बाकी पैविलियन में बैठे कुर्सियां तोड़ते रहते हैं।

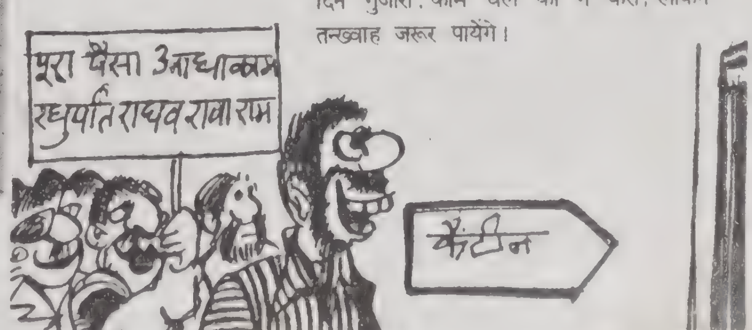
यही हाल आम भारतीय परिवार का है। घर का एक आदमी कमाता है। सुबह काम पर जाता है बाकी घर बैठे कुर्सियां चारपाइयां तोड़ते रहते हैं। एक कमाता है बाकी बैठें खाते हैं।





टैस्ट क्रिकेट टीम में सिलेक्शन हो गया तो मजे आ गये। एक टैस्ट खेलने के १४००० रुपये मिलते हैं। अगर खिलाड़ी ने दोनों पारियों में शून्य शून्य बनाया फिर भी १४००० रुपये उसके।

यही हाल हमारे चारों ओर है। दफ्तरों में देखिये एक बार गवर्नमैन्ट नौकरी में सिलेक्शन हो जाये फिर काम की कोई चिन्ता नहीं। कैंटीन में सारा दिन गुजारो, काम धेले का न करो, लेकिन तनख्वाह जरूर पायेंगे।



पृष्ठ १९ से आगे

असली महारानी से मिलने का अवसर मिल रहा है। जूली को समाजवाद में कोई विश्वास न था, असली बात तो यह है कि उस समय वह अपने हैट के बारे में भी नहीं सोच रही थी।

मोटी और बदसूरत राजकुमारी पोपर्मी एक विशेष स्मार्टमैन के साथ आगे आगे चल रही थी। वे बराबर के कमरे से गुजरे जो कमरे के आगे का छोटा कमरा था और राजकुमारी ने एक दरवाजे पर दस्तक दी जो दूसरी ओर था भीतर से एक स्वर सुनाई दिया और राजकुमारी दरवाजा खोल अन्दर दाखिल हुई, जूली उसके पीछे थी।

''मैडम मैं आप के सामने जूली डिसूजा को पेश करती हूं'' राजकुमारी ने गम्भीर स्वर में कहा।

एक जवान स्त्री जो एक आराम कुर्सी पर बैठी थी, तुरन्त उठी और भाग कर आगे आई। उसने एक दो क्षण तक जूली को घूरा फिर प्रसन्न हो जोर से हँसी।

''अन्ना यह तो बहुत ही कमाल है। मेरा ख्याल नहीं था हम इस कदर सफल होंगे। आओ हम दोनों एक साथ खड़े हो कर देखते हैं।

जूली की बांह पकड़ वह उसे कमरे के दूसरी ओर ले जा एक आदमकद शीशे के सामने जा खड़ी हुई।

''देखो''? वह प्रसन्न हो बोली, ''बहुत ही बढ़िया मैच हैं''।

महारानी शीबा को एक नजर देखते ही जूली को बात कुछ कुछ समझ आने लगी थी। महारानी एक जवान स्त्री थी, शायद जूली से एक दो वर्ष बड़ी हो। उसके बालों का रंग भी वैसा ही था और जूली जैसी ही पतली दुबली भी थी वह शायद कुछ लम्बी थी। साथ-साथ खड़े होने पर समानता बहुत ही आसानी से देखी जा सकती थी, बारीकी से देखने पर उन दोनों का रंग बिलकुल एकसा ही था।

महारानी ने खुशी से ताली बजाई, वह एक बहुत ही खुशमिज़ाज नवयुवती प्रतीत होती थी।

''इससे बेहतर हमें कुछ नहीं मिल सकता था मेरी ओर से फियोडोर वास्कोविच को बधाई देना, अन्ना। उसने वाकई बढ़िया काम किया है''।

''अभी तक मैडम'', राजकुमारी धीमे स्वर में बोली ''इस नवयुवती को कुछ भी पता नहीं है''।

''सच'', महारानी ने कुछ शान्त होते हुए कहा ''मै तो भूल ही गई थी. ठीक है, मैं इसे बता देती हूँ।

''हमें अकेला छाड़ दो, अन्ना मारटोल्वोवा''

''परन्तु. मैडम —''

''हमें अकेला छोड़ दो. मैंने कहा ना।

गुस्से से पैर पटकते बड़े ही बेमन से अन्ना मारटीलोवा कमरे से बाहर गई। महारानी बैठ गई और जूली को भी बैठने का इशारा किया।

''यह बूढ़ी औरतें तंग कर देती हैं'' शीबा ने कहा ''परन्तु इन्हें रखना भी पड़ता है अन्ना मारटीलोवा औरों से बेहतर है। अच्छा अब मिस— अरे हाँ, मिस जूली डिसूजा। मुझे तुम्हारा नाम पसन्द आया. मुझे तुम भी पसन्द आई हो, तुम हमदर्द हो, मैं आदमी को देखते ही बता सकती हूँ उसमें हमदर्दी है या नहीं''।

''आप बड़ी चतुर हैं, मैडम'' पहली बार जूली बोली। ''मैं चतुर हूँ'' महारानी ने शान्त स्वर में कहा, ''अच्छा आओ मैं तुम्हें सब कुछ समझा दूं वैसे कुछ ज्यादा बताने को है नहीं। तुम्हें हमारी रियासत का इतिहास तो पता है न, हमारे परिवार के लगभग सब ही लोग मर चुके हैं ...यों द्वारा हत्या, शायद मैं इस परिवार की अन्तिम निशानी हूँ। इस पर मैं एक स्त्री हूँ, मैं तख्त पर बैठ नहीं सकती। तुम सोचती हो वे मुझे जिन्दा रहने देंगे। मैं जहाँ भी जाती हूं। मेरी हत्या के प्रयास किये जाते हैं, है तो बिलकुल ही फिजूल बात इन लोगों में खास अक्ल भी नहीं है''।

''अच्छा'' जूली कुछ कहने की आवश्यकता समझ, बोली।

''''ज्यादातर तो मैं छुपी रहती हूं जहाँ मेरी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता है पर कभी-कभी जनता के समारोहों में भाग लेने, मुझे आना ही पड़ता है जैसे अब मैं यहां बहुत से जनता संबंधी कार्यों में भाग लूंगी'। वापिस जाते हुए दूसरे स्थानों पर भी मुझे लोगों से मिलना जुलना होगा। दूसरी रियासत में खेलों का बड़ा ही जोर है वहां के खेल बहुत मजेदार होते हैं।''

''वाकई ? जूली ने पूछा।

''हाँ बहुत ही उत्तम। और मुझे खेल बहुत अच्छे लगते हैं। वैसे मुझे यह सब तुम से कहना तो नहीं चाहिये, पर तुम्हारा चेहरा हमदर्दी से भरा है इसलिये बताती हूँ। वहां भी मेरी हत्या के प्लैन बन रहे हैं। हालांकि अगले दो सप्ताह तक किसी भी हालत में मेरी हत्या नहीं होनी चाहिये''।

''पर पुलिस—'' जूली ने बोलना शुरू किया

''पुलिस ? हां वह बहुत अच्छी है और हम लोग पुलिस से भी तेज़ हैं हमारे अपने जासूस भी हैं। मुझे पहले से ही चेतावनी ... जाती है कि हत्या का प्रयास होगा, पर ... शायद चेतावनी न भी मिले''।

उसने अपने कन्धे उचकाये।

''मुझे कुछ समझ आने लगा है, ... चाहती हो मैं तुम्हारी जगह लूं'' जूली धीरे- बोली।

''सिर्फ खास-खास मौके पर'' महा... उत्सुकता पूर्वक बोली तुम्हें कहीं न कहीं क... ही रहना होगा, समझीं'। अगले दो हफ्तों ... मुझे दो बार तीन बार या चार बार भी तुम... जरूरत पड़ सकती है। हर बार ऐसा किसी ... किसी जनता समारोह पर ही होगा। जाहिर ... किसी मिलने-जुलने में, तुम मेरी जगह नहीं ... सकतीं''।

''बेशक नहीं'' जूली सहमत हुई।

''तुम बढ़िया काम चला लोगी, विश्वा... दे फियोडोर वास्कोविच ने बड़ी अकलम... दिखाई''।

''फर्ज करो, मेरी हत्या हो जाये?'' जूली बोली।

''इसका चान्स तो है पर हमारी गु... खबरों के अनुसार वे लोग मेरी हत्या न... करना चाहते, मेरा अपहरण करना चाहते हैं पर मैं तुम से झूठ नहीं बोलूँगी, वे लोग ब... भी फैंक सकते हैं।''

''अच्छा,''! जूली बोली।

उसने महारानी का ही रवैया अपनाने ... कोशिश की। वह पैसों के बारे में बात क... को भी बहुत उत्सुक थी, पर समझ नहीं ... रही थी कैसे शुरू करें। महारानी ने स्वयं ... उसकी यह समस्या हल कर दी।

''हम तुम्हें तनख्वाह अच्छी देंगे'' उस... लापरवाही से कहा ''याद नहीं आ र... फियोडोर वास्कोविच ने कितनी तनख्वाह ... जिक्र किया था''।

''कर्नल ने कुछ दो हजार रुपये की ब... की थी'' जूली बोली ''हां, हां, वही। अ... याद आया मुझे। काफी है न ? या तुम ती... हज़ार लेना अधिक ठीक समझोगी ?''

''वैसे यदि आपको कोई फर्क नहीं पड़... तो तीन हज़ार ही ठीक रहेंगे।''

''तुम में बिजनैस का माद्दा है'' महारा... ने दयापूर्वक कहा 'काश' मैं भी ऐसी होत... मुझे पैसे के बारे में कुछ मालूम नहीं। मु... जो कुछ चाहिये होता है. मिल जाता ... बस!''

जूली को महारानी का यह नजरिया सी... सादे पर तरीफ के काबिल लगा।

क्रमशः

पृष्ठ १० से आगे

अपना लक्ष्य प्राप्त करना ही था.

रात भर चूहेदानी लगाए रखने के बावजूद भी, जब एक सुबह कोई भी चूहा उसके अंदर कैद न दिखा, तो हमें अपने मकसद के पूरे होने की अपार खुशी हुई. पिछले कई दिनों से जीवन बड़ा अस्त-व्यस्त हो गया था. न खाने की सुध थी, न पहनने की. हमारा प्रिय लेखन-कार्य तो कई दिनों से बंद ही पड़ा था. किंतु हम जैसे लेखक ने उस समय अपनी रचनाओं की शक्ल भी न देखी.

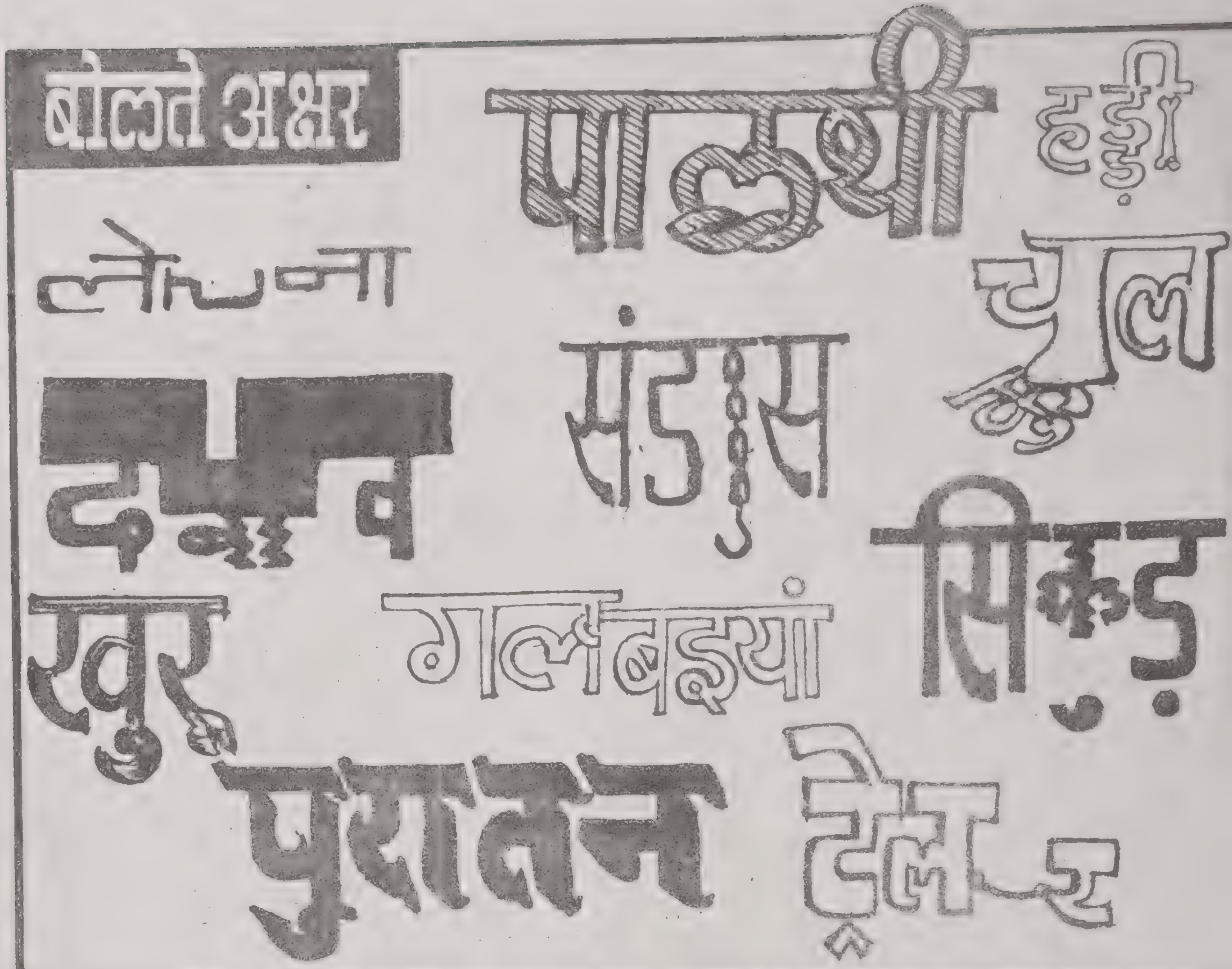
कुछ देर बाद समय मिलने पर, जब हमने एक रचना को पन्नों पर उतारने के लिए, रचनाओं वाली फाइल निकाली तो उसे देखते ही हमें जैसे विषैला सर्प सूंघ गया. पहले की सारी लिखी हुई रचनाएं, किसी पन्ने पर आधी थीं तो किसी पर चौथाई. सारे पन्नों को चूहों ने जाते-जाते, जगह-जगह से कुतर दिया था. लिहाजा रचनाएं लिखने का श्रम व्यर्थ हो चुका था.

पत्थर की मूर्ति बने हमारे हाथों में थीं, रचनाएं और कानों में गूंज रहे थे, दादी जी के शब्द—''इन्हें मारोगे तो गनपति बाबा कोप में पतो न कहा कर डालें . . .''

चना कुरमुरा

एक बूढ़े किसान ने यह पूछे जाने पर कि उसने विवाह क्यों नहीं किया, बताया 'क्योंकि मैं अपना जीवन किसी चीज की चाह करते बिताना अधिक पसन्द करता हूं बनिस्पत अपने पास ऐसी चीज के होने के जिसकी मुझे चाहना नहीं है।'

बोलते अक्षर



चित्र वर्ग पहेली
१० रु. इनाम जीतिये

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें। दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बायीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

र सा ा ा द म य र

☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

ह द र ब सा ा

☐ ☐ ☐ ☐ ☐

। र ह स ट र सा

☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

ा ्स त क अ म

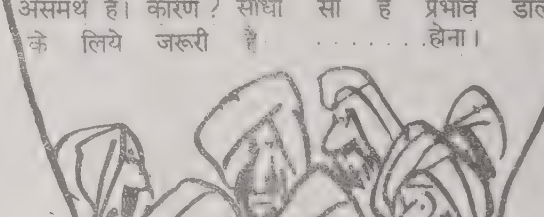
☐ ☐ ☐ ☐ ☐

सही उत्तर :—

☐ - ☐ ☐ ☐ ☐

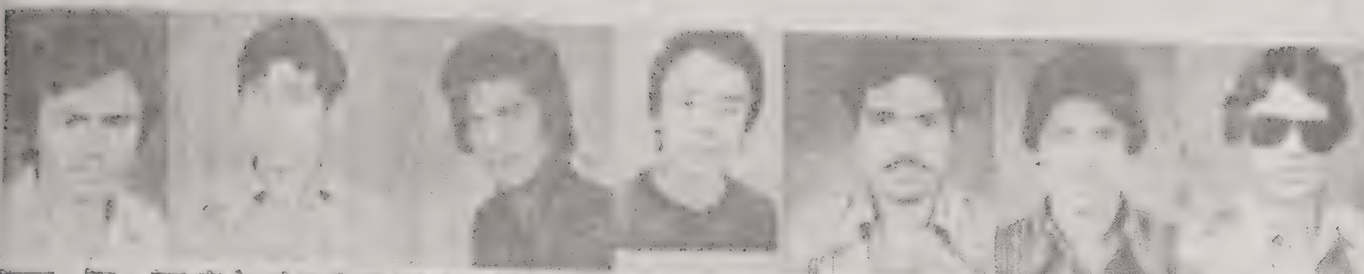
अन्तिम तिथि— ३-१०-८२.

आज सिख समुदाय के पास एक सशक्त नेता की सख्त कमी है जो सबको एक दिशा दे सके। छोटे और दरम्याने नेता ही मौजूद हैं। जो प्रभाव शाली नेतृत्व प्रदान करने में असमर्थ हैं। कारण? सीधा सा है प्रभाव डालने के लिये जरूरी है . . . . . . होना।



नाम ——————————

पता ——————————



विजयानन्द निषाद सेन्ट्रल कुजामाको झरिया, धनबाद (बिहार) २० वर्ष, पत्र-मित्रता

प्रवीन जैन पप्पी द्वारा श्री अमरनाथ जैन कोलांवाली, सिरसा-१२५२०१, १७ वर्ष, गाना,

मनोज कुमार चौरसिया फतेह चौक, बघाना, नीमच (म.प्र.) २० वर्ष, पत्र-मित्रता. फिल्म देखना।

सुन्दर राज शाक्य, कान्तिराज पथ, बाड़ा नं. ४ शाक्य कुन्ज रोड, हैरौंडा, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

मणिभूषण प्रसाद, ६२. भाभा छात्रावास, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५, १८ वर्ष,

संपत लाल चावला, राम भवन, लोकाशाह नगर, ब्यावर जिला अजमेर (राज), १८ वर्ष

जय कमलेश पालीवाल, इन्द्र पुरी दिल्ली-१२, १७ वर्ष. प्यार से मिलना, अपना बनाना



बुरहानुद्दिन शकरुवाला ११ बोहरा बाखल इन्दौर-४५२००२ १६ वर्ष, घूमना-किताबें पढ़ना।

संजय कुमार द्वारा श्री ओम प्रकाश गुप्त २/१४९ नाला पीपल मंडी, आगरा-३१. २० साल,

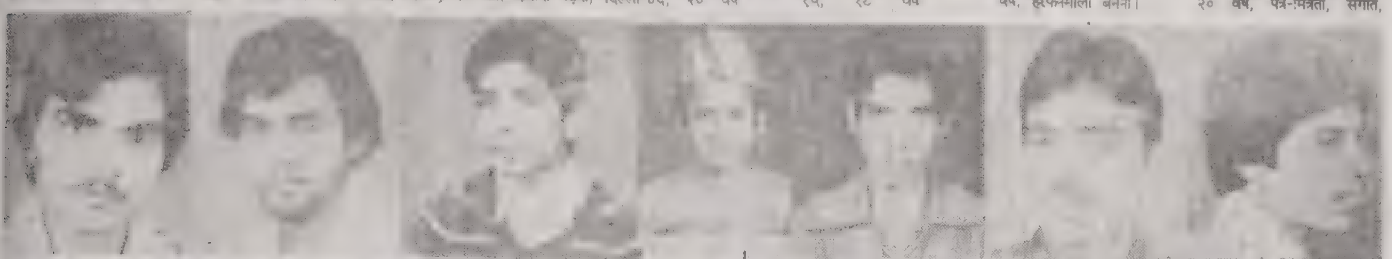
ब्रह्मानंद सरोया, R.Z. ४७ सागरपुर, नागंलराय, नयी दिल्ली, २० वर्ष. दीवाना पढ़ना,

नन्द किशोर पंवार W.Z. १०३७ नांगलराय गांव. दिल्ली-४६, २० वर्ष

जगदीश गुलाटी D-२८; सुदर्शन पार्क (मोती नगर) नई दिल्ली-१५, १८ वर्ष

दलजीत सिंह छाबड़ा, २/९२ गीता कालोनी, दिल्ली-११००३१, १८ वर्ष, हरफनमौला बनना।

प्रवीण कुमार कश्यप H.L. १७०, फेज-II फुलली (पंजाब) २० वर्ष, पत्र-मित्रता, संगीत,



राम कुमार ''परवाना'' दर्शन नगर शहर-फैजाबाद (उ. प्र.) २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

मोहन लाल शर्मा, ६०० मिठ्ठन मोहल्ला, करनाल-१३२००१, २५ वर्ष, पत्र-मित्र व दीवाना पढ़ना।

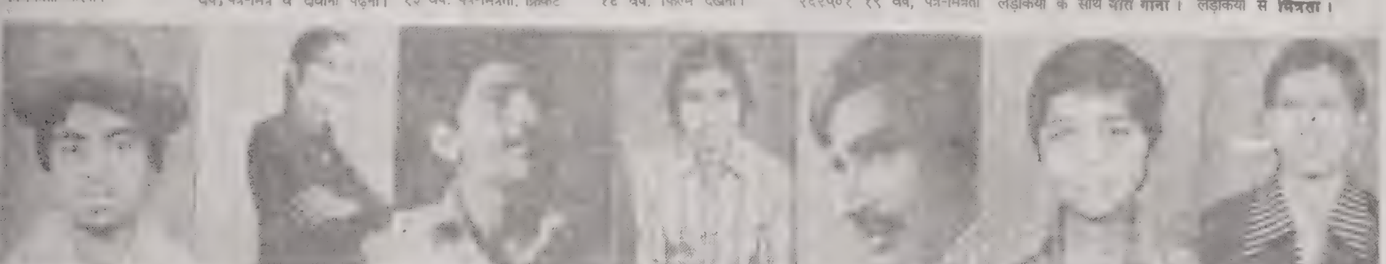
नीरज सक्सेना १८८-B सिविल लाईंस. बरेली-२४३००१ (उ.प्र.), १३ वर्ष. पत्र-मित्रता, क्रिकेट

राजीव कुमार क्षेत्री, विराटनगर, हाटखोला, वार्ड नं. ९० (निपाल) १६ वर्ष, फिल्म देखना।

भगवान सिंह द्वारा श्री हीरा सिंह पो. सैनी . जि. पिथौरागढ़ यू.पी. २६२५०१ १९ वर्ष, पत्र-मित्रता

रूप कुमार बनवानी A/८/३८४, कमला नगर, आगरा, २० वर्ष, लड़कियों के साथ गीत गाना।

गिरीश कुमार चुग A-6/384 कमला नगर, आगरा, २० वर्ष, लड़कियों से मित्रता।



सुदेश कुमार ४५८०/५२ रैगरपुरा, करौल बाग, न. दिल्ली-५, १८ वर्ष, पायलट बनने की इच्छा

राकेश राजानी BK 4 रास्ता दालालपुर, २२ वर्ष, शायरी लिखना।

कंवर सिंह 'विजय' द्वारा श्री गिरिराज डेरी, घौण्डा चौक, दिल्ली-५३, १७ वर्ष

महेन्द्र कुमार गिड़ीया, १४६ धर्मतल्ला रोड, हावड़ा १७ वर्ष क्रिकेट खेलना।

राज कुमार पाण्डेय, २२ डिप्टी गंज, मुरादाबाद-२४४००१, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता

आशुतोष काबरा, भिन्डों का रास्ता चांदपोल बाजार, जयपुर-१, १५ वर्ष क्रिकेट खेलना, तैरना।

इकराम हुसैन मनसूरी, द्वारा मु. आमीन, मिनाक्षी टाकीज के पास, सीकर (राज.) पत्र मित्रता।



मुकेश कुमार जैन, १९, अबुल फजल रोड, नई दिल्ली-११०००१, २० वर्ष, अभिनय करना।

रविन्द्र कुमार जैन द्वारा कटपीस टैक्सटोरियम प्लाट १२. अचाम्बर, २१ वर्ष

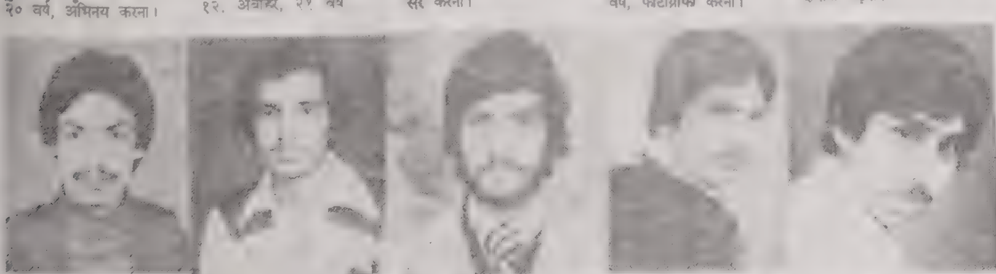
श्री जे. राजेश्वर, ७/४९४, फील्ड गंज नं. लुधियाना, २३ वर्ष, पत्रकारिता, सैर करना।

राजेश कुमार मिश्र J ८/१४, डिंगीया औसानगंज, वाराणसी, १६ वर्ष, फोटोग्राफी करना।

असलम खान द्वारा रोशन मनजीस ३४९० पायापापी-मु-२१ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

अविनाश सिंह, स्टेशन रोड, शाहजहांपुर, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना एवं पत्र-मित्रता

मोहनजीत कुकरेजा, ई-१, स्वामी दयानन्द अस्पताल, शाहदरा दिल्ली-३२, १७ वर्ष, लिखना



बलराम जोशी (दुःखी) ५/७४२ झोछें टोल काठमाण्डौ, नेपाल, २१ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

नेज प्रताप, २९०, लाजपतनगर, अलवर ३०१००१, २० वर्ष, पुराने गाने सुनना एवं दोस्ती करना।

राजेश वशिष्ठ, म.न. ५२५, पत्ती उर्सग मोगा (पंजाब) २० वर्ष पत्र-मित्रता करना।

सैयद सादिक अली, मेहमान मंजिल इमाम बाड़ा, खादिम मोहल्ला, अजमेर, १७ वर्ष

मनोज अरोड़ा, एन. सी. सेनगुप्ता भवन, धानबाद, झरिया, २० वर्ष पत्र-मित्रता करना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ————————————

पता ————————————

————————————

आयु ———— शौक ————

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना

नेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में नेज प्राइवेट लिमिटेड [illegible]

दीवाना के अंक नं. ११ में प्रकाशित वर्ग पहेली का हल

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता: विभव जोशी,
१४ आर. आर. आई,
रुड़की (उ. प्र.)

म	नों	रं	ज	क
न		ग		म
मु	ख	मं	ड	ल
टा		च		ने
व	श		स	त्र

दीवाना के अंक नं. १२ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का हल

उत्तर : जगमग

विजेता: गुलशन पामर,
आजाद भवन,
मुक्तसर (पंजाब)

दीवाना के अंक १३ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का हल

उत्तर : अनुदान **विजेता:** हरमिन्दर सिंह, ९८ लूनिया मोहल्ला देहरादून-२४८००१

पृष्ठ ३३ से आगे

बालिंग

	ओवर	मेडन	रन	विकेट	औसत
बाबविलिस	८८	११	३३०	१५	२२.०
आर प्रिंगल	८२	२२	२१९	७	३१.२
ईयन बॉथम	९३.३	१६	३२०	९	३५.५
फिल एव मंडस	१०३.२	३५	२१६	६	४३.५
ज्यार्फे मिलर	१६	४	५१	१	५१.०
पाल एलेंट	४९	९	१४७	२	५१.०
ज्याफ कुक	१	०	४	०	७३.५

चना कुरमुरा

बेटा—पिता जी जो आपने किया न हो उसकी सजा आपको मिलनी क्या उचित होगी ?

पिता—नहीं बिलकुल उचित न होगा !

बेटा—मैंने होमवर्क (स्कूल का काम) नहीं किया !

●

साथ साथ बड़ी हुई तीन लड़कियों में से जब दो की शादी हो गई, तो दोनों अपनी बिन व्याही हम जोली को तरह तरह की बातें सुना कर परेशान किया करती थी। वह उनकी बात हँसी में उड़ा दिया करती थीं कि एक दिन बात हद से आगे बढ़ गई।' अच्छा हमें बताओ तो' दोनों ने उसे छेड़ा 'क्या, कभी किसी ने तुम से शादी का प्रस्ताव किया है ?

बहुत ही शरारत भरी मुस्कान के साथ उसने जवाब दिया 'अपने पतियों से क्यों नहीं पूछ लेतीं' ।

●

यानी—'रेल का टाइम टेबल रखने का क्या लाभ यदि रेलें समय पर चलती ही नहीं।

टिकिट चैकर—'आपको पता कैसे चलेगा की रेल समय पर नहीं आयी यदि आपके पास टाइम टेबल ही न हो।'

●

ऐसा हो एक किशोर, किशोरों के कोर्ट के मेजिस्ट्रेट के सामने 'श्री मान् मैंने रूपये इसलिये चुराये थे क्योंकि मेरे पास खाना नहीं था, कोई मित्र नहीं था और न ही कोई घर था।'

मेजिस्ट्रेट सख्ती से ' बेटे तुम्हारी कहानी सुन मुझे दुःख हुआ। अगले नौ महीने, जेल में तुम्हें यह सब चीजें मिल जायेंगी।'

●

जब गांधी जी राऊंड टेबल कान्फ्रेंस के लिये लन्दन गये थे तो हर व्यक्ति जाना माना या साधारण गांधी जी से मिलना चाहता था, विद्वान्, विज्ञानी, राजनीतिज्ञ और पत्रकार सभी एक बार गांधी जी से मिलने के इच्छुक थे। बर्नर्डशा आरबीशप आफ कैंटबरी, महाराजा और महारानी, छोटे से छोटे समाचार रिपोर्टर यहां तक की सड़क के बच्चे भी एक भेंट के इच्छुक थे। वे सब गांधी जी के लिये समानरूप से महत्वपूर्ण थे और वे सबसे बिलकुल एक सा ही बर्ताव करते थे।

वही अपनी लंगोटी, बकरी और करीब-करीब बिना दाँतों की मन मोहनी मुस्कान तथा बेमिसाल खुशमिजाज जो सारे पश्चिम पर एक बार छा गये। इन विषयों पर वहाँ इस हद तक जानकारी फैल गई कि शायद ही कोई दूसरा ऐसा अवसर आया हो जब बात इस हद तक फैली हो।

अनगिनत गांधी जी पर बने चुटकुलों में से एक बार मेरे दिमाग में आता है जो न्यूयार्क के एक रिसाले में छपा था। जिसमे दो महिलाओं को जो समूह गान में भाग ले रही थीं, दिखाई गई थी' एक दूसरी से कह रही थी' कपड़ों की इतनी चिन्ता क्यों करती हो गांधी तो नहीं करते—और देखो वे कितने लोक प्रिय हो गये हैं'।

लघु विज्ञापन

दिल्ली के लघु उद्योग : बड़ा योगदान

स्वाधीनता के बाद दिल्ली ने देश के एक महत्वपूर्ण आधुनिक लघु उद्योग केन्द्र के रूप में अपना स्थान बना लिया है। आज दिल्ली में ८६७ करोड़ रुपये की लागत के लगभग ४५ हजार उद्योग हैं जिनमें विभिन्न किस्म का २१९६ करोड़ रुपये मूल्य का आधुनिक सामान प्रति वर्ष तैयार किया जा रहा है। इन उद्योगों में लगभग ४ लाख ५० हजार व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ है। दिल्ली की कुल आय का १७.१५% औद्योगिक उत्पादों से मिलता है।

औद्योगिक विकास कार्यक्रम : कुछ प्रमुख तथ्य

- छठी योजना का परिव्यय : २१६१.७७ लाख रुपये; १९८०-८१ का व्यय ५४५.०५ लाख रुपये; वित्तीय वर्ष १९८२-८३ के लिए परिव्यय ५९८ लाख रु.।
- ओखला औद्योगिक बस्ती में इलैक्ट्रोनिक्स के लिए ७० औद्योगिक प्लाट विकसित। इलैक्ट्रोनिक्स के परीक्षण तथा विकास केन्द्र का भवन तैयार।
- रानी झांसी रोड पर ६०० बहुमंजिली फैक्ट्रियों का एक वृहद औद्योगिक कम्पलैक्स निर्माणाधीन है जो अगले वर्ष आबंटन के लिए तैयार हो जायेगा। इसके पूरा होने पर लगभग १३ हजार ५०० व्यक्तियों को इससे रोजगार मिलेगा।
- पटपड़गंज में १६० एकड़ भूमि में ९ औद्योगिक बस्तियां विकसित की जा रही हैं, जो अगले वर्ष तक तैयार हो जायेंगी। इसके पूरा हो जाने पर २५ हजार लोगों को रोजगार मिलेगा। १०० एकड़ भूमि और विकसित करने की योजना है।
- झिलमिल ताहिरपुर में ६ समूह बहुमंजिली फैक्ट्रियों का निर्माण शीघ्र शुरू किया जा रहा है। इस पर लगभग २०० लाख रुपये व्यय आयेगा। भूमि पहले ही अधिग्रहीत कर ली गयी है और निर्माण की रूप रेखा तैयार है।
- दिल्ली लघु उद्योग विकास निगम के माध्यम से नरेला में विकसित एक हजार प्लाटों का शीघ्र ही आबंटन किया जा रहा है। इससे लगभग १५ हजार लोगों को रोजगार मिलेगा।
- नन्द नगरी में ६ नये कार्यशालाओं के आबंटन की प्रक्रिया लगभग पूर्ण।

सस्ते ऋण

- इस वर्ष लघु तथा घरेलू उद्योगों के लिए ४ प्रतिशत के आसान ब्याज पर १८ लाख रुपये का प्रावधान।
- अभियक्ता उद्यमियों को अनुदान। ऋणों की ब्याज दर में काफी कमी करके केवल ७ प्रतिशत दर लागू है।

सूचना एवं प्रचार निदेशालय,
दिल्ली प्रशासन द्वारा प्रसारित


मुन्ना का खाता
असली बैंक में कैसे खुला
देखो राजू ! मेरी बचत।
आहा !
ओह ! मेरे पैसे।
मेरी गुल्लक टूट गई।
घबराओ मत बेटे ! मैं तुम्हें कल पंजाब नैशनल बैंक ले चलूंगा।
पंजाब नैशनल बैंक
हाँ मुन्ना, अब पाँच रू० की छोटी बचत भी बैंक में जमा कर सकते हो और तुम दस साल के हो गए हो इसलिए अपने चैक खुद साईन कर सकते हो।
अब मुझे गुल्लक की आवश्यकता नहीं। मैं अब असली बैंक में बचत करता हूं। पीएनबी में मेरी बचत हर दिन बढ़ती जा रही है।
तुम भी अपने डैडी से क्यों नहीं कहते कि पीएनबी में तुम्हारे नाम एक खाता खुलवा दें
अब मुन्ना और राजू दोनों अपने मम्मी पापा की तरह पंजाब नैशनल बैंक में बचत करते हैं।
पीएनबी ज़िन्दाबाद

निःशुल्क प्रवेश

दीवाना कॅमल रंग प्रतियोगिता

पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. ३०/-
दूसरा इनाम (३) रु. २०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. १०/-
१० प्रमाणपत्र

दीवाना

५ आश्वासन इनाम



इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह ज़ाफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

नाम .... उम्र ....

पता ....

....

प्रवेशिकाएं ३०-९-८२ से पहले भेजी जायें.

CONTEST NO.

R.N. 16596/65 Regd. No. D(DN)-275

